हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक, वीरवार, 23 अगस्त, 2018 को अध्यक्ष, डॉ0 राजीव बिन्दल की अध्यक्षता में हिमाचल प्रदेश विधान सभा, कौंसिल चैम्बर, शिमला-171004 में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरम्भ हुई।

शोकोद्गार

23.08.2018/1100/केएस/एजी/1

अध्यक्षः आज से प्रारम्भ होने वाले इस मानसून सत्र में भाग लेने के लिए मैं सभी माननीय सदस्यों, माननीय मंत्रिगण, विशेषकर सदन के नेता, श्री जय राम ठाकुर जी, नेता प्रतिपक्ष, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी व माननीय पूर्व मुख्य मंत्री, श्री वीरभद्र सिंह जी का हार्दिक स्वागत करता हूं। मेरा यह भरसक प्रयास रहेगा कि माननीय सदस्यों को सदन में अपनी-अपनी बात रखने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो । वहीं मैं आपसे अपेक्षा भी करूंगा कि आप भी नियमों की परिधि में रहकर चर्चाओं को सार्थक बनाएं। सभी माननीय सदस्यों से मेरी यह अपेक्षा भी रहेगी कि सदन की कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने में मुझे आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा।

इससे पूर्व कि आज की कार्यवाही आरम्भ करें, मेरा सभा मण्डप में उपस्थित सभी से निवेदन है कि वे राष्ट्रीय गान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

(सभा मण्डप में उपस्थित सभी राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए)

पिछले सत्र और इस सत्र के मध्य दुखदायी घटना हुई है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी, पूर्व प्रधानमंत्री व श्री दिले राम शवाब जो पूर्व में विधान सभा के सदस्य रहे, का निधन हुआ है। सर्वप्रथम माननीय मुख्य मंत्री जी इस पर शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

23.08.2018/1100/केएस/एजी/2

मुख्य मंत्रीः माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि भारत के पूर्व प्रधान मंत्री, भारत रत्न परम आदरणीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का 16 अगस्त, 2018 को दुखद निधन हो गया। उनकी आयु 93 वर्ष थी। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

आदरणीय श्री वाजपेयी जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1924 को ग्वालियर में हुआ था और ग्वालियर एवं कानपुर से उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उसके उपरांत वे कुछ समय तक पत्रकारिता से जुड़े रहे। उन्होंने राष्ट्र धर्म, पांच जन्य और वीर अर्जुन जैसे अखबारों का सम्पादन किया। प्रारम्भ में वे आर्य समाज और फिर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आए और इसके पश्चात उन्होंने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

23.8.2018/1105/AV-AG/1

मुख्य मंत्री जारी ----------

मुझे लगता है कि आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन के बारे में और उनकी बहुत सारी बातों से यह देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया अवगत है। मुझे यहां पर यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी इस देश में ही नहीं पूरे विश्व में एक अलग पहचान के साथ जाने जाते रहें। आज जब वे हमारे बीच में नहीं है तो हम महसूस कर रहे हैं कि यह क्षति हमारे राष्ट्र की तो है ही लेकिन राष्ट्र के साथ-साथ यह क्षति पूरे विश्व के लिए भी है। अगर मैं आगे कहूं तो हिमाचल प्रदेश के लिए यह क्षति और भी ज्यादा है क्योंकि हिमाचल प्रदेश के साथ उनका बहुत अच्छा सम्बन्ध रहा है। आज तक आज़ाद भारत के जितने भी प्रधान मंत्री रहे हैं उन सबका सम्बन्ध हिमाचल प्रदेश से रहा है लेकिन जितना नज़दीकी सम्बन्ध अटल जी का इस प्रदेश से रहा वह शायद ही किसी का रहा हो। इसलिए उस दृष्टि से पूरे हिमाचल प्रदेश में हम सब लोग इसको एक बहुत बड़ी क्षति मानकर चल रहे हैं। वर्ष 1993 में विपक्ष के नेता रहते हुए आदरणीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के सामने जब मानवाधिकार आयोग की बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व करने के लिए प्रस्ताव रखा गया तो उन्होंने उसको स्वीकार किया और जनेवा में जाकर के भारत का पक्ष बहुत प्रभावी ढंग से रखा।

'जननायक' और 'युग पुरूष' श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी जनसंघ के पहले अध्यक्ष और तत्पश्चात जब वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई तो भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष बनें। उससे पहले भारतीय जनता पार्टी जनसंघ के रूप में काम करती रही और अटल जी जनसंघ के एक नेता के रूप में पूरे देश में काम करते रहें। मगर वर्ष 1980 में जब भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई तो पार्टी के पहले अध्यक्ष के नाते उनको पार्टी का नेतृत्व करने का अवसर मिला। परिणामस्वरूप पूरे देशभर में भारतीय जनता पार्टी का आधार बढ़ा, आज अटल जी हमारे बीच में नहीं है और उस दिन को नहीं देख पाये। भारतीय जनता पार्टी जिसकी स्थापना पहली बार वर्ष 1980

23.8.2018/1105/AV-AG/2

में हुई थी आज यह पार्टी देश की ही नहीं पूरी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। आज पूरे देशभर के 21 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन की सरकार और केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काम कर रही है। हमारे लिए बहुत ज्यादा खुशी होती अगर आज अटल जी हमारे सामने इस अवसर को देख पाते।

अध्यक्ष महोदय, अटल जी पहली बार वर्ष 1996 में देश के प्रधान मंत्री बनें। उसके बाद वर्ष 1998-99 में वे देश के दूसरी बार प्रधान मंत्री बनें। उसके पश्चात फिर वर्ष 1999 से 2004 तक देश के प्रधान मंत्री पद पर रहें।

श्री टी0सी0 द्वारा जारी

23.08.2018/1110/TCV/DC/1

माननीय मुख्य मंत्री .... जारी

इस बीच बहुत सारी पार्टियों को साथ लेकर सरकार का गठन व संचालन हुआ। उनका सफलतापूर्ण व्यक्तित्व सबको साथ लेकर चलने का था। इसकी वज़ह से वे सफलतापूवर्क केन्द्र में सरकार का नेतृत्व करने की दिशा में आगे बढ़े। वर्ष 1998 में वाजपेयी जी की

सरकार ने देश की सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए पोखरन में परमाणु परीक्षण किए। श्रेद्धय श्री अटल बिहारी वाजपेयी की वज़ह से ही भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बन सका व उनके मार्गदर्शन में ही देश की विकास दर में आशातीत सुधार हुआ और देश सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व गुरू बना। पहले सांसद, फिर विदेश मंत्री और बाद में प्रधान मंत्री के रूप में उन्होंने भारत की विदेश नीति को नये आयाम दिए। पूरी दुनियां में विश्व बन्धुत्व, परस्पर समानता और विश्व समानता के लिए उनके सत्त प्रयासों को सदैव याद किया जाता रहेगा। भारत के विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से पहली बार हिन्दी में भाषण देकर उन्होंने हिन्दी को और भी मुखर किया। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के हित को सर्वोपरि रखा और पड़ोसी देशों के साथ मधुर एवं शान्तिपूर्ण संबंधों को बनाए रखने की दिशा में काम किया। 'लाहौर बस यात्रा' और 'आगरा शिखर सम्मेलन' इस दिशा में प्रमुख रूप से मील के पत्थर साबित हुए। बतौर प्रधान मंत्री उन्होंने 'स्वर्णिम चतुर्भुज राष्ट्रीय राजमार्ग' योजना आरम्भ की। इसके अलावा भारत के 5 लाख गांव को बारहमासी सड़कों के साथ जोड़ने के लक्ष्य को लेकर उन्होंने 'प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना' शुरू की जो विशेषकर हिमाचल प्रदेश जैसे पर्वतीय राज्यों के लिए एक वरदान साबित हुई। उन्होंने देश में सर्वशिक्षा अभियान की शुरूआत की, जिससे शिक्षा को 6 से 14 वर्ष आयु के बच्चों को मूल अधिकार बना दिया गया। उन्होंने नई दूरसंचार नीति में बहुत महत्वपूर्ण काम किया। इसके साथ ही अटल जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी होने के कारण कवि, साहित्यकार, नेता और मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण थे।

23.08.2018/1110/TCV/DC/2

अध्यक्ष महोदय, मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अटल जी 10 बार लोकसभा सांसद और 2 बार राज्यसभा सांसद रहे । इतने लम्बे समय तक राजनीति में

रहने के बावजूद भी उनके सम्मान में न सत्तापक्ष और न ही विपक्ष में कोई कमी रही । जब अटल बिहारी वाजपेयी जी लोकसभा में बोलने के लिए खड़े होते थे, चाहे वहां पर कितनी भी विपरीत परिस्थितियां होती थी, चाहे लोकसभा में कितना भी तनावपूर्ण वातावरण होता था, लेकिन जब अटल जी बोलने के लिए खड़े होते थे तो सब लोग उनको सुनने के लिए शांत हो जाते थे। जो कि आज के समय में बहुत ही मुश्किल काम है और उसको एक व्यक्तित्व ही कर सकता था, वह अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया। जनसभाओं में जब उनका जाना होता था और उनको अपनी बात कहने का अवसर मिलता था तो जब तक अटल जी बोल रहे होते थे, लोग अपना स्थान नहीं छोड़ते थे। हमने उनके बहुत सारे कार्यक्रमों का आयोजन किया और हमने इस बात को देखा कि चाहे कितनी भी अव्यवस्थित सभा हो जाये लेकिन जब अटल जी मंच पर होते थे और बोलना शुरू करते थे तो जो व्यक्ति जहां पर बैठा है, वह वहीं बैठकर और जो जहां खड़ा है, वह वहीं खड़ा होकर उनको सुनता था। ये उनका एक नेता के रूप में बहुत बड़ा व्यक्तित्व था जिसको हम कभी भूल नहीं सकते हैं।

श्रीमती एन0एस0 द्वारा ... जारी

23-08-2018/1115/NS/DC/1

मुख्य मंत्री ------जारी

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों के लिए उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को है, खासतौर पर जो नई पीढ़ी के हम लोग हैं। उनका जीवन हर बात को ले करके प्रेरणादायक है। हमने उनको कितनी भी गम्भीर परिस्थिति में कभी भी विचलित नहीं देखा। चाहे उनके ऊपर जितने भी वार हो रहे हों। लोकतंत्र में आमने-सामने से लोकसभा के अंदर जब चर्चा के दौरान प्रहार होते थे लेकिन कभी भी हमने उनके चेहरे को विचलित नहीं देखा। अध्यक्ष महोदय, ऐसा नेतृत्व जिन्होंने पूरे देश का नेतृत्व किया और देश का

नेतृत्व करते हुए विश्व नेता के रूप में उनकी एक छवि विश्व में उभर कर आई। ऐसे नेतृत्व का हिमाचल प्रदेश के साथ संबंध होना हमारे लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात है।

हिमाचल मेरा दूसरा घर है। इसका ज़िक्र उन्होंने अपने भाषणों में कई बार किया। लेकिन वे भाषणों तक कहने में ही सीमित नहीं रहे बल्कि अपने व्यवहार में उन्होंने इस बात को लाया। जब सत्ता में होते थे, तब भी अटल जी हिमाचल प्रदेश में गर्मी के मौसम में कुछ दिन बिताने के लिए जरूर आते थे। ऐसा हमने देखा है। वे जब प्रधान मंत्री के पद पर थे तो हमें लगा कि अटल जी प्रधान मंत्री की हैसियत से अबकी बार हिमाचल प्रदेश में नहीं आयेंगे। लेकिन वे इसके बावजूद भी आये। सात या चार दिन ही सही वे मनाली में आये और उनके मिलने का वही तरीका था और कविता सुनाने का भी वही तरीका था।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस बारे में, कल सर्वदलीय सभा में श्रद्धांजलि देने के लिए जो सभा निर्धारित की गई थी उसमें ज़िक्र कर रहा था। उनका जब मनाली में आना हुआ तो हमने हिमाचल प्रदेश की ओर से कुछ प्रस्ताव प्रस्तुत किये कि आपका यह-यह कार्यक्रम है। तब वे कहने लगे कि मैं हिमाचल में आराम करने के लिए आया हूं और आप लोग मुझे फिर काम में लगा रहे हैं। हमने कहा कि विधायकों के साथ आपका परिचय बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा हां, होना चाहिए। इसके लिए आधे घंटें का समय निर्धारित हुआ और जब विधायकों के साथ बैठक चली तो वे दो घंटे से भी ज्यादा बोले। उन्होंने हर बात पर चर्चा की। उनके ज़माने में किस प्रकार का दौर था और विधायकों की किस प्रकार की समस्यायें थी तथा किस प्रकार उन्होंने संघर्ष में रह करके संगठन

के लिए काम किया। आज की परिस्थिति में विधायक की भूमिका क्या है, हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए, इन तमाम बातों पर अटली जी बोलते थे। मैं उनकी बातों को अभी भी स्मरण करता हूं। इतनी महत्वपूर्ण बातें जो उन्होंने उस वक्त कही, हम सबके लिए इतनी उपयोगी हैं। हम इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि उस समय उन्होंने जो बातें कही और बात कहने के बाद कहा कि हम यहां पर चर्चा करके जो बातें कर रहे हैं अगर ये सारी बातें व्यवहार में आ जायें तो विपक्ष या सत्ता पक्ष वाले चाहे कोई भी हों, आप कहीं भी छोटे या बड़े पद पर हों आपके प्रति समाज़ में एक बहुत बड़ी आस्था होनी चाहिए और ऐसी बहुत

सारी बातों का उन्होंने ज़िक्र किया। हमने कहा कि शाम को आपकी कविता सुननी है। वे शाम को कविता सुनाने के लिए बैठ गये और कितने मंत्रमुग्ध हो करके लोग वहां पर बैठ गये। नग्गर कैसल में सारा प्रांगण उनकी कविता को सुनने के लिए भरा हुआ था और वहां लोग एकत्रित थे।

अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी बातें उनके जीवन से हम लोगों के लिए प्रेरणा के रूप में हैं। मैं अनुभव करता हूं कि ऐसा व्यक्तित्व जिसने कवि के रूप में अपनी एक अलग छवि बनाई है और स्थान प्राप्त किया है तथा एक नेता के रूप में उन्होंने एक अलग स्थान ग्रहण किया है और

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

23.08.2018/1120/RKS/HK-1

माननीय मुख्य मंत्री... जारी

इसके साथ-साथ स्वास्थ्य की दृष्टि से आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी पिछले 12 वर्षों से सक्रिय राजनीति में नहीं थे। वे 12 वर्षों से अपने घर के अंदर ही रहे। 12 वर्षों के बाद जब वे इस दुनिया को छोड़कर अपने घर से बाहर निकले तो हमने देखा कि पूरा देश भी घर से बाहर निकला हुआ है। जब उनकी शव यात्रा पार्टी मुख्यालय से बाहर निकली तो वहां पर काफी भीड़ थी। हमने सोचा कि यह भीड़ शायद यहीं तक होगी लेकिन शव यात्रा के 6 किलोमीटर से ज्यादा के सफर में जो भीड़ शुरू में थी, वही अंत तक रही।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का देहांत 93 वर्ष की आयु में हुआ। पीढ़ी के नेता होने के कारण उनके मन में बुजुर्गों व युवाओं के प्रति श्रद्धा का भाव था और उसी भाव के साथ उनकी शव यात्रा के दौरान 10, 12, 15 व 18 वर्ष के नौजवान हमने सड़कों पर देखे।

अध्यक्ष महोदय, यदि कोई व्यक्ति एक हफ्ते या दस दिन के लिए सक्रिय राजनीति से बाहर हो जाता है तो लोग उसको याद करना भूल जाते हैं। उसके प्रति श्रद्धा का भाव तब

तक रहता है, जब तक वह सक्रिय राजनीति में हो। यदि वह व्यक्ति सक्रिय राजनीति में न हो तो श्रद्धा का भाव उसके प्रति कम होता जाता है।श्रद्धेय अटल जी पिछले 12 वर्षों से सक्रिय राजनीति में नहीं थे परंतु फिर भी उनके प्रति लोगों की श्रद्धा का भाव इस कदर जीवंत था, जो हमें आज देखने को मिला। लेकिन इस बात का हमें बहुत दुःख है कि अटल जी हमारे बीच में नहीं रहे।

हिमाचल प्रदेश एक छोटा-सा प्रदेश है। इस छोटे से प्रदेश के लिए उनकी बहुत सारी देन है। रोहतांग टनल का शिलान्यास करते समय उनके मन में यह भाव था कि लाहौल और स्पिति के लोगों को आने-जाने में बहुत असुविधा होती हैं। ठोलंग गांव से उनके कबायली मित्र टाशी दावा इस बारे में हमेशा उनसे मांग करते रहते थे। लाहौल और स्पिति के लोगों की कठिनाइयों के प्रति उनकी बहुत संवदेनाएं थी

23.08.2018/1120/RKS/HK-2

जिसे उन्होंने रोहतांग टनल के माध्यम से पूरा किया। यह बात ठीक है और सभी नेता लोग भी इसके लिए प्रयत्न करते रहते थे। यह उन्हीं की देन है कि आज रोहतांग टनल के माध्यम से आना-जाना शुरू हो गया। कुछ दिन पहले मुझे भी उस टनल के मार्ग से सिसू गांव तक जाने का मौका मिला। अगर आज अटल जी जीवित होते और रोहतांग टनल के मार्ग से लाहौल और स्पिति जाते तो उनकी भावनाओं को इस प्रकार संतोष मिलता, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते।

पिछले कल शोक-सभा में हमारे वरिष्ठ नेताओं ने कहा कि जब भी हिमाचल प्रदेश के लिए सहयोग की बात होती थी, अटल जी सहयोग देने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश को इंडस्ट्रीयल पैकेज भी दिया।

अध्यक्ष महोदय, आज हमने ऐसे नेतृत्व को खोया है और इस कमी को हम शायद ही पूरा कर पाएंगे। आज की तारीख में प्रदेश इस चीज़ को महसूस भी कर रहा है।

23.08.2018/1125/बी.एस/एच.के/-1

मुख्य मंत्री जारी.....

अध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश में श्रद्धेय अटल जी के योगदान से जो कार्य हुए हैं, चाहे वह रोहतांग सुरंग हो, चाहे कोल डैम या फोर लेन का कार्य हो वे सराहनीय हैं। हमारी सरकार अपने मंत्रि- मंडल के माध्यम से एक प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेज रही है ताकि इन परियोजनाओं के नाम आदरणीय अटल जी के नाम से हम रख सकें। यह प्रदेश के लिए एवं प्रदेश वासियों के लिए श्रद्धेय अटल जी की स्मृति में एक उचित कदम रहेगा, इस बारे में हम गहनता से विचार कर रहे हैं। आदरणीय अटल जी एक महान व्यक्तित्व के धनी थे और हिमाचल प्रदेश के लिए जो विकास कार्य उन्होंने किए हैं वे हमें सदैव स्मरण रहेंगे। हिमाचल प्रदेश के प्रति जो उनका स्नेह और लगाव था उस चीज की पूर्ति हम कभी नहीं कर पाएंगे। मैं आज इस माननीय सदन के माध्यम से ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति मिले और वे किसी-न-किसी रूप में फिर से जन्म लें और हमारे देश को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति हो। मैं श्रद्धेय अटल जी को अपनी ओर से और सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार और उनके सगे-संबंधियों को जो उनके जाने से क्षति हुई है उस क्षति को सहन करने की शक्ति दे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश की विधान सभा के पूर्व विधायक स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब जी का 96 वर्ष की आयु में 26 जुलाई, 2018 को निधन हो गया । यह सदन उनके देहांत पर गहरा शोक प्रकट करता है। स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब जी का जन्म 02 फरवरी, 1922 को जिला कुल्लू के पटारना गांव में हुआ था। उन्होंने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की थी। स्वर्गीय श्री दिलेराम शवाब जी वर्ष 1951 से 1961 तक लोक संपर्क अधिकारी रहे और उसके बाद कुछ समय के लिए भारत सरकार के अधीन प्रचार के संगठक के रूप में कार्य किया तथा 1962 में इस पद से त्याग पत्र देने के उपरांत जालन्धर

के उर्दू समाचार पत्रों और अग्रेंजी, ट्रिब्यून (अम्बाला) के लिए विशेष सम्वाददाता के रूप में कार्य किया। उन्होंने अपने राजनीतिक कार्यकाल में बंजार विधान सभा चुनाव क्षेत्र के लिए बहुत योगदान दिया। श्री दिले राम

23.08.2018/1125/बी.एस/एच.के/-2

शवाब जी ने औट से लेकर त्यागी तक पुलों का निमार्ण करवाने, शिक्षा के क्षेत्र, सड़कों के निमार्ण में बजट का प्रावधान करवाने में उनका अहम योगदान रहा है। उन्होंने ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क की स्थापना में भी अहम भूमिका निभाई तथा वे कुल्लू पत्रकार संघ,डाक तार कर्मचारी संघ के प्रधान और सदाचार समिति के जिला संगठक भी रहे। उन्होंने सहकारिता, फलोत्पादन और हरिजन कल्याण से सम्बन्धित अनेक संस्थाओं में भी कार्य किया। इनकी कविता, मछली पकड़ना, आखेट, छायांकन कला और संस्कृति में विशेष रूचि रही। यह माननीय सदन श्री दिले राम शवाब के द्वारा प्रदेश के लिए किए गए कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। यह सदन उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिवारजनों को इस असहनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

अध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश में पिछले दिनों भारी बारिश के कारण बहुत जान-माल का नुकसान हुआ है और जान-माल के नुकसान के साथ-साथ हमने यह भी देखा कि 13 व 14 अगस्त, 2018 को इन दो दिनों में हिमाचल प्रदेश में कई वर्षों के रिकॉर्ड टूटे हैं।

श्री डी.टी. द्वारा जारी....

23.8.2018/1130/DT/YK/1

मुख्यमंत्री ....जारीः

वर्ष 1901 के बाद वर्षा का सारा रिकॉर्ड टूट गया। प्रदेश भर में यह वर्ष 2011 के पश्चात् बहुत बड़ी बारिश रिकॉर्ड की गई। उस समय भी बहुत से लोगों की मृत्यु हुई थी, जिनके प्रति मैं अपनी सवेदनाएं प्रकट करता हूँ।

इसके साथ-साथ बाढ़ के कारण केरल राज्य में भारी जान-माल का नुकसान हुआ, उसके लिए भी मैं इस माननीय सदन के माध्यम सवेदनाएं प्रकट करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ पत्रकार, लेखक व सांसद श्री कुलदीप नैय्यर का आज नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 95 वर्ष के थे। वे राज्य सभा के सदस्य और ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त भी रहे। आपातकाल के समय वे भारत के पहले पत्रकार थे, जिन्हे जेल भेजा गया था। उनको इसलिए भी जाना जाता है कि लोग उनके सभी आर्टिकल्ज को बड़े चाव व गंभीरता के साथ पढ़ते थे। मैं उनके निधन पर शोक प्रकट करता हूं और ईश्वर उनके परिवार को इस दुःख को सहने करने की शक्ति दे।

अध्यक्ष महोदय, आज के शोकोद्गार में विशेष तौर पर पूर्व प्रधान मंत्री आदरणीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन पर तथा इस माननीय सदन के विधायक रहे स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट करता हूं तथा उन्हें श्रद्धांजलि देता हूं। उनके परिवार को इस सदन के माध्यम से शोक प्रस्ताव पहुंचे यह भी मैं आपसे निवेदन करता हूँ। अध्यक्ष महोदय आपने मुझे बोलने का समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

23.8.2018/1130/DT/YK/2

अध्यक्षः श्री मुकेश अग्निहोत्री, नेता प्रतिपक्ष अब इस शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः आदरणीय, अध्यक्ष महोदय, आज पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का शोकोद्गार प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया । मैं अपनी और अपने विधायक दल की तरफ से उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। अटल जी कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे लेकिन उनका जीवन हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। उनका अधिकांश जीवन

विपक्ष में गुजरा। लगभग 40 वर्ष उन्होंने विपक्ष में गुजारे। एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखने के बाद संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र के 3 बार प्रधान मंत्री बने। उनका रूतवा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर बहुत ऊपर है। अटल जी पत्रकार, कवि और उसके बाद राजनेता भी बने

श्री...एन जी द्वारा जारी

23/8/2018/1135 /एन0जी0/वाई0के0-1

श्री मुकेश अग्निहोत्री .....जारी.....

अटल जी 3 बार देश के प्रधान मंत्री बने। वे कवि रहे, पत्रकार रहे और अखबार के सम्पादक रहे। उन्होंने देशहित की जो बातें थी उनको जनता के दरबार में रखा, नेताओं के दरबार में रखा । हमारे तीन पूर्व माननीय मुख्य मन्त्री श्री वीरभद्र सिंह जी, श्री शान्ता कुमार जी और प्रो0 प्रेम कुमार धूमल जी ने उनके साथ बहुत समय तक काम किया और हमें इस बात की खुशी है कि जिस तरह से उन्होनें अपने मुख्य मंत्रियों के साथ व्यवहार किया उससे कई अधिक सम्मान उन्होंने श्री वीरभद्र सिंह जी का भी किया। वह जब भी मिलते थे तो अपनत्व का भाव दिखाते थे। जब वह प्रधान मन्त्री बने तो उनमें यह साहस था कि वे कह पायें की 50 साल के दौरान इस देश में क्या हुआ। अगर मैं ऐसा कहूं तो यह हिन्दुस्तान के पुरूषार्थ के साथ धोखा होगा। पिछली सरकारों द्वारा किये गये कामों को स्वीर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी रिकार्ड में ले कर आये, जबकि आज का दौर तो बदला हुआ दौर है। लेकिन उन्होंने खुले दिल से यह बात कही कि सरकारें कान्टिनूइटी में काम करती है और जो कांग्रेस सरकारों ने किया उसे हम आगे बढायेंगे। पूर्व माननीय प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्री पी0वी0 नरसिम्हा राव जी ने विपक्ष में होते हुए भी उनका चयन किया और उन्हें यू0एन0ओ0 भेजा और वे गये। अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर भारत का पक्ष रखने के लिए उनका काफी बार चयन हुआ और उन्होंने बड़ी वीरता से हिन्दुस्तान का पक्ष वहां रखा। जब संसद में हमला हुआ तब कांग्रेस की माननीय अध्यक्षा, श्रीमती सोनिया गांधी जी ने फोन करके उनका कुशल क्षेम पूछा तो उन्होंने कहा कि जिस देश में विपक्ष को अपने प्रधान मन्त्री के बारे में चिन्ता हो वहां लोकतन्त्र कभी हार नहीं सकता। तो इस तरह से

पक्ष-विपक्ष में रिश्ते रहा करते थे। स्वर्गीय अटल जी ने ही यह परिभाषित किया कि जो राजनीतिक विरोधी है वह राजनीतिक शत्रु नहीं हैं। इसीलिए उन्हें अजात शत्रु के नाम से परिभाषित भी किया गया यानी जिसका कोई विरोधी न हो शत्रु न हो। लेकिन आज की पीढ़ी के लोगों को, ख़ासतौर पर हम लोगों को, उनकी इस परिभाषाओं से सबक लेना है कि किस तरह से हमकों पक्ष-विपक्ष का सम्मान करना है। मतभेद और मनभेद की बात भी अटल जी द्वारा ही परिभाषित की गई थी। उन्होंने कहा था की पार्टियों में मतभेद होना चाहिए लेकिन मनभेद

23/8/2018/1135 /एन0जी0/वाई0के0-2

नहीं होना चाहिए। ऐसी बातें वह प्रायः किया करते थे। जब हमारे सामने के लोग (सत्ता पक्ष की ओर इशारा करते हुए) यह कहा करते थे और नारा दिया करते थे कि "गर्व से कहो हम हिन्दू हैं", तो अटल जी में यह साहस था और वह कह पाये कि "गर्व से कहो हम भारतीय हैं"। ऐसी शख्सियत हमारे बीच से चली गई। 1957 में वह सांसद बने और 1999 तक लगातार वह सांसद रहे। कभी वह बलरामपुर से जीत गये, कभी वह लखनऊ से जीत गये, कभी वह ग्वालियर से जीत गये, कभी वह दिल्ली से जीत गये। जगह-जगह से वही नेता जीत सकता है जिससे लोग प्यार करते हों, जिसका कोई आधार हो। वह राज्य सभा में भी रहे। 1999 तक लगातार वह सांसद रहे। वह विपक्ष में भी रहे और

श्री आर0 जी0 द्वारा जारी

23/08/2018/1140/RG/AG/1
श्री मुकेश अग्निहोत्री-----जारी

उन्होंने दो बार देश का प्रतिनिधित्व भी किया।

अध्यक्ष महोदय, मुझे राजनीति में तो उनके साथ काम करने का मौका नहीं मिला, लेकिन बतौर पत्रकार मेरी उनसे भेंट अवश्य हुई और उनको मैंने पढ़ा भी है। उनकी किताबें भी मैंने पढ़ी हैं। उसमें एक जगह तो यह लिखा है कि अटल जी और पिता जी ने

इकट्ठे लॉ में ऐडमीशन लिया। दोनों एक ही क्लास में, एक ही सेक्शन में पढ़ते थे और एक ही कमरे में रहते थे। अटल जी ने राजनीति के चलते बीच में लॉ छोड़ दी थी, लेकिन उनके पिता जी ने लॉ की पढ़ाई पूरी की। जब अटल जी क्लास में नहीं आते थे तो उनके पिता जी से उनके बारे में पूछा जाता था कि बेटा कहां है और जब उनके पिता जी क्लास में नहीं आते थे तो अटल जी से उनके बारे में पूछा जाता था। तो इस प्रकार से बाप-बेटे के बीच अंतरंग रिश्ते रहे। इस प्रकार से वे धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए।

अध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश के साथ शुरू से उनका लगाव रहा और हिमाचल के प्रीणि में उन्होंने एक छोटा सा आशियाना भी बनाया। जब देश का कोई इतना बड़ा नेता हिमाचल में बसता है तो यह हम सब लोगों के लिए बड़े गौरव की बात होती है और इसके साथ-साथ प्रदेश का नाम भी ऊंचा उठता है। वर्ष 2006 तक वे यहां आते भी रहे। जब वे यहां आते थे तो बाकी कामों से हटकर यहां कविता पाठ भी होता था। सरकारी कामों के संचालन के साथ-साथ ये बातें भी यहां होती थीं।

जब हमारे दिवंगत प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी ने उनको किडनी के इलाज के लिए विदेश भेजा तो राजीव जी ने इसका जिक्र कहीं नहीं किया। लेकिन बाद में श्री अटल जी ने ही अपने संस्मरण में यह बात कहीं कि जब मैं बहुत बीमार हुआ तो राजीव जी ने मुझे जबरदस्ती एक डेलीगेशन में भेजकर इलाज के लिए प्रेरित किया। तो उस समय नेताओं के इस तरह के रिश्ते दलगत राजनीति से ऊपर उठकर रहे। आज हम सदन के माध्यम से उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं। आज जो उनकी जननायक की छवि बनी है, वह सबको साथ लेकर चलने के लिए ही उनकी यह छवि बनी है।

अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव इस बारे में यहां सदन में रखा है, मैं अपने आपको और अपने दल को उसमें शामिल करता हूं।

-/2

23/08/2018/1140/RG/AG/2

अध्यक्ष महोदय, एक शोकोद्गार प्रस्ताव जो माननीय मुख्य मंत्री जी की तरफ से नहीं आया। वह हमारे प्रदेश की राज्यपाल रहीं श्रीमती उर्मिला सिंह जी का है क्योंकि

उनका भी निधन हुआ है और उन्होंने काफी वर्ष यहां राजभवन में व्यतीत किए। वे बहुत मिलनसार थीं और सब लोगों से मिलती थीं। वे भारत के एस.टी. कमीशन की चेयरपरसन भी रहीं। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह करुंगा कि इस प्रस्ताव को भी यहां शामिल कर लिया जाए क्योंकि काफी दिनों तक वे हमारे राजभवन को सुशोभित करती रही हैं।

23/08/2018/1140/RG/AG/3

अध्यक्ष महोदय, श्री दिले राम शवाब जी इस सदन के दो बार विधायक रहे, वह भी आज हमारे बीच नहीं हैं। उन्होंने बन्जार चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। शुरूआती दौर में प्रदेश को कैसे आगे बढ़ाना है, वे उन लोगों में शामिल थे। मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से उनको भी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, बाढ़, बारिश और तूफान से जो केरल में नुकसान हुआ है, उसमें काफी लोग अपनी जान गवां चुके हैं और भी काफी नुकसान हो रहा है। इसलिए उस प्रदेश की मदद करने की जरूरत है। माननीय मुख्य मंत्री जी ने अपने प्रदेश की तरफ से पांच करोड़ रुपये भेजे हैं। इसके अतिरिक्त हमने भी अपने सभी विधायकों का एक महीने का वेतन केरल के लिए भेज दिया है।

एम.एस.द्वारा जारी

23/08/2018/1145/MS/AG/1

श्री मुकेश अग्निहोत्री जारी---------

जो लोग वहां पर मारे गए हैं हम उनके परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं। हिमाचल प्रदेश में भी बाढ़ और वर्षा से नुकसान हुआ है और बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ है। उसमें भी 24-25 लोग मारे गए हैं। इस दुःख की घड़ी में हम

सभी उन हिमाचली परिवारों के साथ हैं। जो सदन में शोकोद्गार प्रस्ताव रखा गया है उसमें भी हम अपने आपको शामिल करते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैय्यर जी का भी निधन हुआ है उसमें भी मैं अपने शोकोद्गार प्रकट करता हूं तथा अपने दल को भी शामिल करता हूं। उन्होंने बड़े लम्बे समय तक पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना योगदान दिया और एक बहुत बड़ा नाम पत्रकारिता के क्षेत्र में अदा किया है। उन्हें भी आज हम याद करते हैं।

अध्यक्ष जी, जितने भी शोकोद्गार प्रस्ताव यहां पर माननीय मुख्य मंत्री जी ने रखे हैं और खासतौर पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन से जो नुकसान हुआ है वह केवल भारतीय जनता पार्टी का नुकसान नहीं हुआ है बल्कि यह पूरे राष्ट्र का नुकसान है। इसमें भी हम अपने आपको शामिल करते हैं।

23/08/2018/1145/MS/AG/2

अध्यक्षः माननीय मुख्य मंत्री जी कुछ कहेंगे।

मुख्य मंत्रीः अध्यक्ष महोदय, जो एक त्रुटि रह गई थी, वह यह थी कि पूर्व में हिमाचल प्रदेश में राज्यपाल रही श्रीमती उर्मिला सिंह जी का भी इस बीच में दुःखद निधन हुआ है जिनका नाम हमारे इस प्रस्ताव में छूट गया था। मैं उनके नाम को इस शोकोद्गार प्रस्ताव में शामिल करता हूं और उनके दुःखद निधन पर अपनी संवेदनाएं प्रकट करता हूं। मैं चाहूंगा कि सदन की संवेदनाओं को उनके परिवार तक अवश्य पहुंचा दिया जाए।

23/08/2018/1145/MS/AG/3

अध्यक्षः इस शोकोद्गार में बोलने के लिए 13-14 माननीय सदस्यों ने अपने नाम दिए हैं और सभी को बोलने का अवसर मिलेगा। मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध रहेगा कि सभी अपनी बात संक्षिप्त में कहें।

शिक्षा मंत्री(श्री सुरेश भारद्वाज): अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता आदरणीय मुख्य मंत्री श्री जय राम ठाकुर जी ने यहां पर शोकोद्गार प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं और माननीय विपक्ष के नेता श्री मुकेश अग्निहोत्री जी ने भी उसमें अपने आपको शामिल किया है। मैं भी उसमें अपने आपको शामिल करता हूं।

अध्यक्ष जी, भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी केवल-मात्र एक दल के नेता नहीं थे और यदि मैं यह कहूं कि वे एक देश के भी नेता नहीं थे तो शायद अनुचित नहीं होगा। उनकी जो सोच थी, जो विचार थे और जो उनकी कार्य-पद्धति थी, उसके कारण वे अंतरराष्ट्रीय जगत में भी पहचाने जाते थे। उनकी मृत्यु पर पाकिस्तान के अखबार "डॉन" ने और अमरीका से निकलने वाले अखबार "वाशिग्टन पोस्ट" ने भी अपने शोकोद्गार प्रस्तुत किए। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी एक साधारण परिवार से निकलकर देश के प्रधानमंत्री बने और "भारत रत्न" से सुशोभित हुए। वे अनेक वर्षों तक विपक्ष में रहे और यही भारत के लोकतंत्र की खूबी है कि जहां पर हम सभी चुनाव के समय में अथवा लोकसभा, राज्यसभा या विधान सभाओं में एक-दूसरे पर कड़ा प्रहार करते हैं वहीं पर एक-दूसरे का सम्मान भी करते हैं और उनकी खूबियों का आदर भी करते हैं। माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी पहले विदेश मंत्री थे

जिन्होंने भारत की राष्ट्र भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ में पहचान दिलवाई थी। विदेश मंत्री रहते हुए उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दी में

23/08/2018/1145/MS/AG/3

संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना भाषण दिया था। उन्हें "शांति दूत" के रूप में पहचाना जाता है और उन्होंने शांति का पैगाम लेकर भारत से लाहौर के लिए बस यात्रा की थी।

जारी श्री जे0के द्वारा--------

23.08.2018/1150/जेके/डीसी/1

शिक्षा मंत्रीः------जारी--------

लेकिन जब उस शांति के संदेश का पाकिस्तान के द्वारा माकूल जवाब नहीं मिला और कारगिल युद्ध के रूप में वह पीठ में छूरा घोंपने वाली घटना हुई तो उस समय के अमेरिका के राष्ट्रपति ने उन्हें जब वाशिंगटन बुलाया तो उन्होंने कहा था कि जब तक भारत भूमि से एक-एक घुसपैठिया बाहर नहीं निकल जाता, तब तक मैं भारत छोड़ कर किसी दूसरे देश में नहीं जाऊंगा। कारगिल युद्ध में उन्होंने विजय प्राप्त की। शांति दूत के रूप में जिस तरह से वे बस यात्रा करते हुए लाहौर पहुंचे थे, उसी प्रकार भारत को दुनिया में एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थान दिलाने के लिए उन्होंने पोखरन में बम विस्फोट किया था। तब बहुत सारे लोगों ने कहा था कि दुनिया आपके ऊपर सेंक्शन्ज़ लगाएगी। सेंक्शन्ज़ लगी। अमेरिका और बहुत बड़े-बड़े देश जो अपने आपको विकसित राष्ट्र मानते हैं, उन्होंने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए लेकिन उन सब का

प्रतिकार करते हुए, उनकी परवाह न करते हुए भारत को एक शक्तिशाली, शक्ति सम्पन्न परमाणू राष्ट्र के रूप में दुनिया में खड़ा किया और उसके बाद उनकी कूटनीति और विदेश नीति का परिणाम था कि जो संयुक्त राज्य अमेरिका कभी पाकिस्तान का दोस्त हुआ करता था, उसको दक्षिण एशियाई देशों में अपना स्थान बनाए रखने के लिए उस राष्ट्र के राष्ट्रपति को हिन्दुस्तान की यात्रा करनी पड़ी और उस समय उनकी कूटनीति का परिणाम था कि अमेरिका का राष्ट्रपति हिन्दुस्तान में पांच दिन रहा जबकि वहां वह केवल पांच घंटे रह सका। आज भी प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना सारे देश में जानी- पहचानी जाती है। सम्पूर्ण देश के प्रत्येक गांव को मुख्य सड़क से जोड़ने का जो मूल कार्य था, वह आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सोच का परिणाम था जिसके कारण आज सम्पूर्ण देश के ग्राम मुख्य सड़क के साथ जुड़ गए। अटल जी की सोच का परिणाम था कि सम्पूर्ण देश को एक करने के लिए उन्होंने स्वर्णिम चतुर्भुज योजना कलकत्ता, चेन्नई, दिल्ली और मुम्बई को

23.08.2018/1150/जेके/डीसी/2

मिलाने के लिए प्रारम्भ की जिससे जहां रोजगार के अवसर बढ़े वहीं पर सम्पूर्ण देश को परिवहन की दृष्टि से उन्होंने एक करने का कार्य किया। आज जिस प्रकार से पर्यावरण की, पानी की मुश्किलें आ रही हैं, उन्होंने प्रधान मंत्री रहते हुए ही इस पर विचार किया था और सम्पूर्ण देश की नदियों को जोड़ने के लिए उन्होंने एक वर्किंग ग्रुप का निर्माण किया था जिसकी अध्यक्षता आज के भूतल परिवहन मंत्री, आदरणीय श्री नीतिन गडकरी जी कर रहे थे। अटल बिहारी वाजपेयी जी का ट्राइबल एरियाज़ के लिए जो प्रेम है, उनके प्रति जो काम होना चाहिए, उसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम ट्राइबल मिनिस्ट्री का गठन केन्द्रीय मंत्रि-मण्डल में किया था। नॉर्थ इस्टर्न स्टेट्स और जो हमारे पहाड़ी राज्य

उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर आदि के लिए विशेष योजनाएं उन्होंने प्रारम्भ की थी। इसी का परिणाम था कि हिमाचल प्रदेश को इण्डस्ट्रियल पैकेज़ मिला, जिसके कारण लाखों हिमाचल के नौजवानों को रोजगार प्राप्त हुआ। हिमाचल प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से भी एक जाना-पहचाना राज्य बन कर और उभरकर सामाने आया। अटल बिहारी वाजपेयी जी एक ऐसे राजनेता थे जिनको ए क्रॉस द पार्टी लाइन विभिन्न दलों में बराबर का सम्मान प्राप्त था।

श्री एस0एस0 द्वारा जारी----

23.08.2018/1155/SS-DC/1

शिक्षा मंत्री क्रमागतः

जैसा यहां पर प्रतिपक्ष के नेता ने कहा भी कि जब संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दुस्तान की बात को रखने के लिए किसी व्यक्ति का चयन करना था तो उस समय केन्द्र में दूसरे दल की सरकार थी लेकिन उसके बावजूद भी अटल बिहारी वाजपेयी जी को नेता बनाकर भेजा गया था, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में जा करके हिन्दुस्तान का पक्ष रखा था। यह उन्हीं का विचार था कि हिन्दुस्तान में सरकारें बनती हैं, यहां पर लोकतंत्र है और सरकारें बदलती हैं। प्रत्येक सरकार काम करती है। कांग्रेस की सरकारें यहां रही हैं उन्होंने भी काम किया है। लेकिन जो काम उनसे छूट गया है उस काम को हम आगे कर रहे हैं। इसलिए यहां पर विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। 1971 में जब मुक्ति वाहिनी के द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ बांग्लादेश में संघर्ष हो रहा था तो उस समय सम्पूर्ण देश मुक्ति वाहिनी के साथ था। जब हिन्दुस्तान का युद्ध बांग्लादेश बनाने के समय पाकिस्तान के साथ हुआ तो उस समय पार्लियामैंट में आदरणीय अटल जी ने तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी जी को दुर्गा की अवतार कहा था। लेकिन उसके पश्चात् जब 93000 पाकिस्तानी फौजियों को भारत की फौज ने हिन्दुस्तान में युद्धबंदी बनाकर रखा था तो जनरल नियाज़ी को अपने हथियार छोड़ने पड़े थे। उस समय बांग्लादेश तो बन ही गया था और पाकिस्तान का बहुत बड़ा भूभाग भी हमारे हाथ में था। उस समय शिमला में एक समझौता हुआ था और

उस समझौते के अवशेष आज भी हमारे राजभवन में रखे हैं। उस समय हिन्दुस्तान के विपक्ष के बड़े नेता, आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी श्रीमती इंदिरा गांधी को चेतावनी दे रहे थे कि हमारे फौजियों ने जो प्राप्त किया है उसको हम मेज़ के ऊपर कहीं जहाज से छोड़ न दें। जब ऐसा ही हुआ, बिना किसी शर्त के भू-भाग भी छोड़ दिया और 93000 फौजयों को भी छोड़ दिया तो शिमला में शेरे पंजाब एक छोटा-सा स्थान है जहां पर प्रदर्शन हुआ करते थे, वहां आ करके उन्होंने उस समय के प्रधानमंत्री के विरूद्ध उस शिमला समझौते के विरोध में प्रदर्शन किया था और जैन हॉल में बड़ी जनसभा का भी आयोजन किया था। अटल बिहारी वाजपेयी जी पक्के लोकतंत्रवादी थे। आपातकाल में उन्होंने पूरी ताकत के साथ लोकतंत्र की बहाली के लिए विरोध किया और जेल की शलाखों के पीछे गए। ऐसे लोकतंत्रवादी हमारे श्रद्धेय पूर्व प्रधान मंत्री, अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। वे पिछले आठ-दस साल से बोल नहीं पा रहे थे। बाहर कहीं

23.08.2018/1155/SS-DC/2

निकलते नहीं थे। किसी समय उनकी वाणी में सरस्वती का वास हुआ करता था लेकिन 10 वर्षों के अज्ञातवास के बावजूद 16 अगस्त, 2018 को जब उनका निधन हुआ तो 17 अगस्त, 2018 को जब उनकी अंतिम यात्रा प्रारम्भ हुई तो जिस व्यक्ति ने भारतीय जनता पार्टी का निर्माण किया था और उसके प्रथम अध्यक्ष बने थे, देश में भारतीय जनता पार्टी का विकास उनके नेतृत्व में हुआ था, उस अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दो सांसदों से भारतीय जनता पार्टी को प्रारम्भ किया था। जब 17 अगस्त, 2018 को उनकी अंतिम यात्रा राष्ट्रीय समाधि स्थल की ओर जा रही थी तो उनके पीछे एक प्रधान मंत्री, 21 मुख्य मंत्री, हजारों की संख्या में सांसद और विधायक, लाखों लोगों के साथ चल रहे थे। ये उनके व्यक्तित्व का स्वरूप था। आज वे हमारे मध्य नहीं रहे। हिमाचल प्रदेश से उनका विशेष लगाव रहा है। 2006 तक वे लगातार हिमाचल प्रदेश के प्रीणी गांव में आकर रहा करते थे। वे लगातार 2004, 2005 और 2006 में प्रीणी आते थे। भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश कार्य समिति की बैठक को हर वर्ष समापन अवसर पर सम्बोधित करते थे।

जारी श्रीमती के0एस0

28.08.2018/1200/केएस/एचके/1

शिक्षा मंत्री जारी----

आज वे हमारे मध्य नहीं रहे । मैं उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस प्रकार की विभूति का बार-बार इस भारत में जन्म होता रहे ताकि भारत को ऐसे सपूत और नेतृत्व का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे ।

अध्यक्ष महोदय, इस माननीय सदन के दो बार विधायक रहे आदरणीय दिले राम शवाब जी, बन्जार विधान सभा क्षेत्र से 1967 और 1972 में दो बार विधायक रहे । वे केवल मात्र मैट्रिक तक पढ़े हुए थे लेकिन वे जालंधर के उर्दू और अंग्रेजी के अखबारों के अतिरिक्त उस वक्त अम्बाला से जो ट्रिब्यून निकलता था, जो कि अब चंडीगढ़ से निकलता है, उसके भी सम्वाददाता रहे । वे उस समय पब्लिक रिलेशन ऑफिसर भी रहे। उनका बन्जार क्षेत्र में विकास की दृष्टि से बहुत बड़ा योगदान रहा है। दिले राम शवाब जी जब सदन में भी बोला करते थे, मैने विद्यार्थी के रूप में एक बार उनको सदन में सुना है, उनको सुनने के लिए सभी लोग आतुर रहा करते थे। उनका 95 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ है। मैं उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, हमारे राज्य की पूर्व राज्यपाल रही श्रीमती उर्मिला सिंह जी का भी निधन हुआ है। वे ट्राइबल एरिया से आती थीं और हमारे ट्राइबल कमिशन की चेयरपर्सन रही है और हिमाचल प्रदेश में लगातार पांच वर्षों तक राज्यपाल के रूप में राज भवन को सुशोभित करती रही हैं। उनके प्रति भी मैं अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

साथ ही श्री कुलदीप नैय्यर जी, जो हिन्दुस्तान के वरिष्ठ पत्रकार रहे हैं, वे भारत के उच्चायुक्त भी रहे हैं, उनका भी निधन हुआ है। उनके साथ मुझे भी राज्यसभा में कार्य

करने का अवसर प्राप्त हुआ है। वे जब बोलते थे, हालांकि वे हमारी विचारधारा का विरोध किया करते थे लेकिन जब वे बोलते थे तो बड़े सटीक

28.08.2018/1200/केएस/एचके/2

शब्दों में और बहुत अच्छी भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी बात कहते थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में आज इतनी बड़ी आयु में भी उनके लेख अखबारों में छपते हैं। उनके प्रति भी मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

प्रदेश में जो भारी बरसात की वजह से कुछ लोगों की मृत्यु हुई है और केरल में भी बाढ़ से बहुत से लोगों की मृत्यु हुई है, उनके प्रति भी मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। मैं अपने आप को माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा रखे गए शोक प्रस्ताव में सम्मिलित करता हूं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

28.08.2018/1200/केएस/एचके/3

अध्यक्षः अब श्री विपिन सिंह परमार जी, चन्द शब्दों में अपनी बात कहेंगें।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री विपिन सिंह परमार): अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा इस माननीय सदन में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन पर जो शोकोद्गार प्रस्ताव यहां पर रखा गया है, उसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। मैं कह सकता हूं कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के व्यक्तित्व में नेतृत्व तो झलकता ही था, वे अच्छे प्रशासक भी थे, अच्छे कवि भी थे और अच्छे लेखक भी थे। सबसे बड़ी बात आजादी के आन्दोलन के उपरांत जब सरकारें बनना शुरू हुई तो

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी----

23.8.2018/1205/AV-HK/1

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जारी-----

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने सोचा कि हिन्दुस्तान में एक ऐसा विचार, एक ऐसी पार्टी जो समग्र समाज की चिन्ता करे तो उस आशय से चन्द चुनिन्दा लोगों को; जिसमें श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, लाल कृष्ण आडवाणी जी जैसे स्वयं सेवकों को राजनीति के क्षेत्र में भेजा गया। जब वे इस क्षेत्र में आए तो सत्ता और सरकार को बनाने की बहुत उम्मीदें नहीं थीं। शायद उस समय चुनाव इसलिए लड़े जाते थे कि हमारा मत प्रतिशत हर चुनाव में बढ़े। किन परिस्थितियों में जनसंघ पार्टी खड़ी हुई होगी यानि जमानत बच जाए तो समीक्षा होती होगी। एक बार पार्टी के बिखरने का समय भी आया और पार्टी में सांसदों की संख्या 2 से बढ़ाकर 200 तक पहुंचाने का जिम्मा श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को दिया गया। यानि ऐसा समय भी आया होगा और हमने पढ़ा भी है कि जनसंघ के रूप में कहीं किसी प्रान्त में जाते थे तो सुनने के लिए लोग नहीं होते थे। परन्तु अटल जी की कठिन तपस्या, मेहनत तथा उनकी जो एक संवाद की प्रक्रिया थी वे उससे लोगों को सम्मोहित कर लेते थे। अपने व्यवहार और वाणी से सम्मोहन करने का परिणाम यह है कि आज 'भारतीय जनता पार्टी' संगठन के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा संगठन बन गया है। इसके अलावा देश के परिप्रेक्ष्य में भी कहूं तो वर्तमान में हिन्दुस्तान के अधिकतर राज्य भाजपा शासित राज्य हैं। यह शायद श्रद्धांजलि होगी और मैं अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं। मुझे भी उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने का मौका मिला, वहां हजारों नहीं बल्कि लाखों की संख्या में लोग भाव-विभोर व नतमस्तक थे। मैं इस विषय पर यह कहना चाहता हूं कि एक कार्यकर्ता, एक स्वयं सेवक के रूप में पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल जी ने समाज और देश को एक नई दिशा प्रदान करने की कोशिश की है। वे इस देश के तीन बार प्रधान मंत्री रहें और अपने कार्यकाल में जो उन्होंने किया वह अनुकरणीय था। यानि जिस देश में आज़ादी के काफी वर्षों के बाद भी गरीबी व भुखमरी थी; इस देश में अमीरी चमक रही थी और

गरीबी रो रही थी। मुझे याद है उनके जन्मदिन पर विश्व की सबसे बड़ी योजना जिसमें हर परिवार को दो समय की रोटी पेटभर कर मिल सके उसके लिए 'अन्त्योदय अन्न

23.8.2018/1205/AV-HK/2

योजना' शुरू की गई थी। वह योजना इसलिए शुरू की गई क्योंकि इस देश के कुछ हिस्सों में भुखमरी थी। कालाहांडी जैसे जिला में पेट भरने के लिए परिवार अपने बच्चों को बेचते थे और हिन्दुस्तान के भण्डारों में रखा हुआ अन्न नष्ट हो रहा था। एक बार तो ऐसी योजना भी बनी थी कि इस अन्न को हिन्दुस्तान महासागर में फेंक दिया जाए। मुझे यह भी याद है कि यह योजना श्री शांता कुमार जी जब खाद्य आपूर्ति मंत्री थे, उस समय उन्होंने शुरू की थी।

श्री टी0सी0द्वारा जारी

23.08.2018/1210/TCV/YK/1

माननीय स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मंत्री.... जारी

अध्यक्ष महोदय, हमारा यह देश विश्व को रास्ता दिखा सके, हम बैसाखियों के सहारे चलने वाले राष्ट्र और पिछलगू न बनें। उस समय हमें चेतावनी आई थी कि हम अणु विस्फोट न करें। श्री अटल जी ने कहा था कि विश्व शान्ति के लिए अणु शक्ति कम होनी चाहिए। परन्तु अन्त में ये निष्कर्ष निकला कि अणु शक्ति के आधार पर कुछ मुल्क भारत को आंखें दिखा रहे थे। उस समय पोखरन में बम धमाके इसलिए किए गए थे ताकि हिन्दुस्तान भी दुनियां के मानचित्र पर अपना स्थान बना सके। उन्होंने नदियों को जोड़ने का काम किया, कावेरी नदी विवाद वर्षों से लटका हुआ था। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी जब इस मुल्क के प्रधान मंत्री जी थे, उन्होंने इस दिशा में प्रयास किए। अध्यक्ष महोदय, हमारे हिमाचल प्रदेश से भी कारगिल के युद्ध में बहुत से सैनिक शहीद हुए। कुछ पाकिस्तान के घुसपैठिए हिन्दुस्तान में घुस गये थे, जिसमें भारत के अन्य स्थानों के

अलावा हिमाचल प्रदेश के बहुत से सैनिक शहीद हुए। जब भारतीय सेना पाकिस्तान पर आक्रमण कर रही थी, मुझे याद है उस समय हिमाचल प्रदेश में भाजपा की सरकार थी और केन्द्र में भी हमारी सरकार थी। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री व वहां के सेनाध्यक्ष वाशिंगटन चले गये। वहां जाकर कहने लगे कि भारत हमारे ऊपर आक्रमण करने के लिए तैयार है, उनको रोकिए। उस समय हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री अटल जी को वाशिंगटन बुलाया गया और कहा कि आओ समझौता कर लो। अध्यक्ष महोदय, अटल जी की वह वाणी हमें आज भी याद है, उन्होंने कहा कि 'कोई समझौता नहीं होगा, ये हिन्दुस्तान का मामला है और हिन्दुस्तान व दिल्ली में ही हल होगा' । अमेरिका के वाशिंगटन में इस पर कोई चर्चा नहीं होगी। कहने का अभिप्राय यह है कि उनमें राजनैतिक इच्छाशक्ति थी और समाज में कुछ ऐसा करके चले गये कि जाने के बाद भी ऐसा लगता है कि वह आज भी हमारे मध्य में ही है। उन्होंने नये-नये आयाम स्थापित किए। मेरे से पहले भी बहुत से वक्कताओं ने यहां पर ज़िक्र किया है, उन्होंने भारत के स्वाभिमान को यू0एन0ओ0 में जगाया, पहली बार कोई व्यक्ति वहां हिन्दी में बोले और मुक्तिवाहिनी को लेकर इस देश की पूर्व में रही प्रधान

23.08.2018/1210/TCV/YK/2

मंत्री की प्रशंसा की। परन्तु जब बन्दी किए हुए सैनिकों को छोड़ दिया गया तो उनका विरोध किया। ऐसी शक्ति अगर किसी व्यक्ति में थी तो वह शक्ति अटल बिहारी वाजपेयी में थी। देश के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल जी को हम एक चमकते हुए सितारे की तरह देखते हैं और राजनीति के हर दौर को उन्होंने रोशन किया। मैंने उनके बारे में पढ़ा है, जब वे पार्लियामैंट में बोलते थे तो इस देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी भी उनको बहुत ध्यान से सुनते थे। मैंने उनके बारे में यह भी पढ़ा है कि जब वह पार्लियामैंट में नहीं आते थे और नहीं बोलते थे तो वे आतुर होते थे कि श्री अटल जी हर विषय में अवश्य

अपनी टिप्पणी व बातचीत करें। जो सौहार्दपूर्ण वातावरण उन्होंने पार्लियामैंट में बनाया था उसके लिए पार्लियामैंट में सभी दलों के लोग उनका सम्मान व आदर करते थे। अध्यक्ष महोदय, उनको 'भारतरत्न' उनके जन्मदिन पर मिला। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उनको भारतरत्न से सुशोभित किया। उनके जन्मदिन को "गुड गवर्नेंस" के रूप में मनाया जाता है। इस देश को सुशासन मिले यह श्री अटल जी ने इस देश में प्रतिपादित किया था। इसके लिए भी उनको सच्ची श्रद्धांजलि दी जाएगी।

श्रीमती एन0एस0 द्वारा ... जारी

23-08-2018/1215/NS/YK/1

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ------जारी

अध्यक्ष महोदय, मैं यहां पर इस माननीय सदन में यह भी कहना चाहता हूं कि श्री दिले राम शवाब जी जो इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं, पूर्व में इस प्रदेश की राज्यपाल रहीं आदरणीय उर्मिला सिंह जी और पूर्व सदस्य श्री कुलदीप नैय्यर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हिमाचल प्रदेश और केरल में पिछले दिनों जो बाढ़ और भारी बारिश से जानमाल का नुकसान हुआ है, मैं उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। मुझे याद है जिस दिन श्रद्धेय अटल जी की अन्तेष्टि थी, हम भी वहां पर थे और कुछ घंटों के बाद पता चला कि प्रधान मंत्री जी केरल में हैं। केरल में बाढ़ग्रसित लोगों के साथ वे शामिल हुए। भारत सरकार ने उनके लिए सहायता दी है। माननीय जय राम ठाकुर जी ने केरल बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता दी है। मैं भी उन परिवारों के साथ अपने आपको शामिल करता हूं। जो शोकोद्गार प्रस्ताव इस माननीय सदन में रखा गया है, मैं उसमें अपने आपको शामिल करता हूं।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी आज हमारे मध्य में नहीं हैं। मैं परमपिता परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए कामना करता हूं। भगवान शोक संतप्त परिवार और उनके सगे संबंधियों को इस दुःखद घटना को सहन करने की हिम्मत दे। मैं ईश्वर से यह कामना करता हूं। मैं परमपिता परमात्मा से यह भी कामना करता हूं कि ऐसी विभूति पुनः इस देश और समाज के कल्याण के लिए यहां अवतार ले और जो कमियां रह गई हैं उनको दूर किया जाये। अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

23-08-2018/1215/NS/YK/2

अध्यक्षः अब श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी शोकोद्गार प्रस्ताव में भाग लेंगे।

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खुः माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री महोदय जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव रखा है, उस संदर्भ में, मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से भावांजलि देने के लिए खड़ा हुआ हूं। माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के व्यक्तित्व और स्वभाव की तुलना शब्दों में नहीं की जा सकती है। उनकी कवितायें, सोच और उनके आदर्श हमेशा जिन्दा रहेंगे। आज़ादी के दस वर्ष बाद जब वे सांसद बने, उस समय पंडित जवाहर लाल नेहरू जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल जी और लाल बहादुर शास्त्री जी दूरदर्शी नेता थे। श्रद्धेय अटल जी उच्च कोटि के वक्ता थे और जब वे संसद में बोलते थे तो उस समय के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने यह कहा था कि आने वाले समय में एक दिन अटल जी इस देश के प्रधान मंत्री बनेंगे। मेरा कहने का मकसद यह है कि जो उस समय सत्ता पक्ष में होते थे; वे भी उनके व्यक्तित्व को पहचानते थे। माननीय अटल जी विपक्ष में हो करके भी ऐसा सम्मान प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति हैं।

अध्यक्ष महोदय, सन 1985 में कांग्रेस पार्टी को प्रचण्ड बहुमत मिला और ये दो सांसद चुन करके आये थे। अटल जी का जीवन बड़ा सादगी भरा था। उनको फेफड़ों की बीमारी हो गई थी और वे आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे तथा उस समय स्वर्गीय राजीव गांधी

जी ने उन्हें इलाज़ के लिए अमरीका भेजा था। वहां पर भी पैसे की तंगी हुई। श्रीमती सोनिया गांधी जी दो बार वहां पर उनसे मिलने गई। राजीव जी ने अपनी पत्नी से कहा कि लोकतंत्र तभी मज़बूत रह सकता है जहां अटल जैसे विपक्ष के नेता हों और इस बीमारी की हालत में इनको देखा जाये तथा इनके विचारों को सुना जाये। आज अटल जी हमारे बीच में नहीं रहे हैं।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

23.08.2018/1220/RKS/AG-1

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु....जारी

उनका यह स्वभाव था कि वे जो भी बात करते थे बड़ी स्पष्टवादिता और स्पष्ट शब्दों में करते थे। अटल जी पहली बार 13 दिनों के लिए देश के प्रधानमंत्री बनें। दूसरी बार उन्होंने बहुत से राजनीतिक दलों को इक्ट्ठा करके सांझा सरकार चलाई। जो आज 'सबका साथ, सबका विकास' वाला नारा है; यह नारा उस समय सफल रहा जब अटल जी प्रधानमंत्री थे। जो उनके दिखाए हुए आदर्श हैं, जो उनके मन में सादगी थी और जो उनके उच्च कोटि के विचार थे उनको हम अपने में समाए रखें, यही अटल जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

रोहतांग सुरंग उनकी एक परिकल्पना थी। मैंने समाचार पत्र में पढ़ा था कि रोहतांग सुरंग के निर्माण हेतु डॉ0 राम लाल मारकण्डा जी के नेतृत्व में एक डेप्यूटेशन अटल जी से मिला। अटल जी उस समय मनाली के प्रीणी गांव में थे। यह उनकी परिकल्पना थी और वर्ष 2010 में जब श्रीमती सोनिया गांधी जी ने रोहतांग सुरंग का शिलान्यास किया तो उनकी इस परिकल्पना को पूरा किया गया। इस सुरंग निर्माण के लिए धनराशि भी स्वीकृत की गई। आज 8 वर्ष बीत चुके हैं और माननीय मुख्य मंत्री इस सुरंग मार्ग से सिसू

गांव पहुंचे। हमारा यह मानना है कि जो परिकल्पना उन्होंने की थी वह साक्षर होने जा रही है। वे इस देश के प्रधानमंत्री रहे हैं और इस देश की सेवा की है। जो उनकी सोच थी, उसी के अनुरूप आप इस सुरंग का नाम अटल जी के नाम पर रखना चाह रहे हैं, जोकि अच्छी बात है। जो देश का प्रधानमंत्री होता है; उस देश के लिए कुर्बान होता है; देश की सेवा करता है उनके नाम पर योजनाएं चलाई जाएं। उन योजनाओं को अमली-जामा पहनाया जाए और यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अटल जी ने जब अंतिम सांस ली तो सभी दलों के बड़े नेता उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देने के लिए पहुंचे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं कांग्रेस पार्टी की तरफ से उस दिवंगत नेता जो 47 वर्ष तक विपक्ष में रहे, जिन्होंने अपने राजनैतिक जीवन को बड़ी सादगी से निर्वाह किया, हम उनके कार्यों को याद करते रहें और यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी है।

23.08.2018/1220/RKS/AG-2

इसके अलावा स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब 1967-77 तक लगातार 10 वर्ष तक इस सदन के सदस्य रहे। उन्हें शेरे-बंजार के नाम से भी जाना जाता था। स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब का राजनीतिक जीवन बड़ा सादगीपूर्ण था। उनका देहांत 95 वर्ष की आयु में हुआ। उन्होंने महेन्द्र सिंह जी को लगातार 10 वर्ष तक चुनाव में हराया जोकि उस समय के मजबूत व सशक्त नेता थे। महेन्द्र सिंह राजघराने से भी संबंध रखते थे। कांग्रेस पार्टी में ही रहकर स्वर्गीय श्री दिले राम शवाब जी ने अपने राजनैतिक जीवन को अलविदा किया। 3-4 वर्ष पहले जब हम उनसे मिलने गए थे तो उन्होंने उस समय की सोच, उस समय प्रदेश किन कठिनाइयों से गुजर रहा था आदि बातों का व्याख्यान 90 वर्ष की आयु में बड़ी अच्छी तरह से किया। उनके लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि जो वे सादगी भरा जीवन व्यतीत करते रहे; उस सादगी भरे जीवन को हम सब अपनाने की कोशिश करें।

श्री बी.एस. द्वारा .... जारी

23.08.2018/1225/बी.एस./ए.जी./-1

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जारी

प्रदेश में उस वक्त कांग्रेस की सरकार थी, स्वर्गीय श्रीमती उर्मिला सिंह जी, हिमाचल प्रदेश की उस वक्त राज्यपाल थीं। उन्होंने हमेशा सभी दलों के सदस्यों का मान-सम्मान किया और सभी को समान दृष्टि से देखा। माननीय मुख्य मंत्री जी एवं विपक्ष के नेता माननीय श्री अग्निहोत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव इस सदन में लाया है उसमें मैं स्वयं को सम्मिलित करना चाहता हूं।

इसके साथ ही स्वर्गीय श्री कुलदीप नैय्यर जी जो एक वरिष्ठ पत्रकार थे, उनके शोकोद्गार में भी हम सब अपने आपको सम्मिलित करते हैं।

वर्तमान में जो वर्षा के कारण त्रासदी केरल में हुई है, उस पीड़ा को भी मैं इस माननीय सदन में बयां करना चाहता हूं और जो सैकड़ों लोगों की जाने गई हैं, उन्हें भी मैं अपनी ओर से और कांग्रेस दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उस क्षेत्र में पानी ने 10 जिलो में पूरी तरह से तबाही कर दी है। इन 10 जिलों में 80 प्रतिशत नेशनल हाइवे, पी.एम.जी.एस.वाई. के तहत जो सड़कें बनी थीं, वे पूरी तरह तबाह हो चुकी हैं। इस प्रदेश से जो लोग विदेशों में अपना रोजगार कमाने गए थे और पैसा भेज करके उनके परिजनों ने मेहनत करके मकान बनाए थे वो सब तबाह हो चुका हैं। इस त्रासदी की मार से उठने के लिए केरल के लोगों को कम-से-कम दो सौ वर्ष का समय लगेगा। इस संकट की घड़ी में जहां यह सदन केरल के लोगों के साथ खड़ा है वहीं हिमाचल प्रदेश कांग्रेस दल ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री राहुल गांधी जी के दिशा निर्देशो द्वारा यह फैसला लिया है कि सभी कांग्रेस विधायक अपनी एक-एक महीने की सैलरी केरल में राहत कार्यों के लिए देंगे। केरल में आर्थिक तौर पर अधिक राहत देने के लिए कांग्रेस के कार्यकर्ता चंदा इक्ट्ठा

करेंगे ताकि और ज्यादा राहत राशि हम उन लोगों तक पहुंचा सकें। केरल त्रासदी से उठने की कोशिश कर रहा है, उसमें हम भी सहभागी होना चाहते हैं।

23.08.2018/1225/बी.एस./ए.जी./-2

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से हिमाचल प्रदेश में पिछले तीन-चार दिनों से भारी बारिश हुई जिससे प्रदेश में भारी त्रासदी हुई है। वर्ष 1901 के बाद जिला शिमला में इतनी अधिक बारिश हुई है और इससे कई जाने चली गई हैं, असंख्य मवेशी भी मारे गए हैं। इस कारण हमारी काफी ज्यादा सड़के भी प्रभावित हुई है। संकट की घड़ी में कांग्रेस दल की ओर से जो कुछ भी हो पाता है, हम उस सहायता को करने के लिए तैयार हैं। लेकिन इस नुकसान की भरपाई के लिए केन्द्र सरकार से हमें मुख्य व जरूरत के अनुसार सहायता मिल सकती है। हम आशा करते हैं की आपके अधिकारी जल्द-से-जल्द इसका आकलन करें और एक सही रिर्पोट केन्द्र सरकार को भेजें ताकि जो आपदा पीड़ित लोग हैं उनको समय पर राहत मिल सके। इन सब घटनाओं में कांग्रेस पार्टी अपने को सम्मिलित करती है। माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव यहां लाया है उसमें अपने-आप को सम्मिलित करते हुए मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूं।

23.08.2018/1225/बी.एस./ए.जी./-3

अध्यक्षः मेरा सभी माननीय सदस्यों से आग्रह रहेगा कि वे चंद शब्दों में अपनी बात पूरी करें। श्री गोविन्द्र सिंह ठाकुर जी।

वन मंत्रीः अध्यक्ष महोदय, आज सदन के नेता हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री जय राम ठाकुर जी ने एवं विपक्ष के नेता श्रीमान मुकेश अग्निहोत्री जी ने श्रीमान अटल बिहारी वाजपेयी जी और अन्य सभी के लिए श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए यहां पर शोकोद्गार प्रस्ताव लाया है। श्रद्धेय अटल जी की जीवन यात्रा 25 दिसम्बर, 1924 से लेकर 16 अगस्त, 2018 तक रही है। आदरणीय अटल जी की यात्रा अपने-आप में एक ऐसी जीवन यात्रा है

जिसमें वे एक राजनेता, कुशल प्रशासक ही नहीं बल्कि जब देश को आवश्यकता पड़ी तो सीमाओं की रक्षा करने के लिए एक अच्छे सैनिक का भी उन्होंने फर्ज अदा किया। आदरणीय अटल जी साहित्यकार और चहुंमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। श्रद्धेय अटल जी के जीवन के बारे जो शब्द कहे जा रहे हैं वे सब कम पड़ रहे हैं। आदरणीय अटल जी अपनी कविताओं में बहुत सी बातों को लिखा है । आज उन कविताओं में लिखे हर शब्द के महत्व का पता चलाता है ।

श्री डी.टी. द्वारा जारी....

23.8.2018/1230/DT/DC/-1

वन मंत्री जारी...

एक कविता उन्होने लिखी है 'आदमी'। जीवन के उतार-चढ़ाव में हम कभी बड़े आदमी होते कभी छोटे होते हैं। लेकिन हमें गलतफ़हमी रहती है कि हम कितने बड़े आदमी हैं। उन्होने लिखा :

पेड़ के ऊपर चढ़ा आदमी ऊंचा दिखाई देता हैं,

जड़ में खड़ा आदमी निचा दिखाई देता है।

आदमी न ऊंचा होता है, न नीचा होता है,

न बड़ा होता है न छोटा होता है।

आदमी सिर्फ आदमी होता है।

इसी कविता में उन्होंने लिखा है :

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।

इसीलिए तो भगवान कृष्ण को शास्त्रों से सजे रथ पर चढ़े कुरूक्षेत्र के मैदान में खड़े अद्वितीय गीता सुनानी पड़ी थी।

मन हार कर मैदान जीते नहीं जाते ,न मैदान जीतने से मन जीते जाते हैं। और अन्त में जो कहा है आदमी की पहचान उसके धन या आसन से नहीं होती उसके मन से होती है। मन की फ़कीरी पर कुबेर की सम्पदा भी रोती है। ऐसे थे श्री अटल बिहारी वाजपेयी। मुझे तो केवल मात्र इतना कहना है कि यह मेरा सौभाग्य है कि अटल जी जब भी हिमाचल प्रदेश आए मनाली का उनसे विशेष प्रेम रहा। मेरे पूज्य पिताजी, स्वर्गीय ठाकुर कुंज लाल जी जब अटल जी से मिलने जाते थे तो मैं भी कभी-कभी उनके साथ जाता था। अटल जी इतनी सादगी से मिलते थे कि कभी लगा नहीं इतने बड़े महान पुरूष से हम मिल रहे हैं। सन् 2000 में भारत के प्रधान मन्त्री बन कर आये और जैसे ही मनाली अपने घर पर पहुंचे तो एस०पी०जी० वाले को कहा कि भाई बाकि सब बात बाद में पहला यह काम करो, मेरे

23.8.2018/1230/DT/DC/-2

प्रीणी के लोग कहां है, उनको बुलाओ और सबसे पहले उन्होनें प्रीणी ग्रामवासियों को बुलाकर उनसे बातचीत की। उसी दिन की बात है हम उनसे मिले लगभग पन्द्रह-बीस मिनट चाय पीने के बाद जब हम निकले तो भारतीय जनता युवा मोर्चा के पच्चीस-तीस कार्यकर्ता मनाली से कुल्लू की ओर जा रहे थे। उन्होंने मुझे कहा कि वह अटल जी से मिलना चाहते हैं। मैने मन में सोचा की मैं थोड़ी देर पहले ही अटल जी से मिलकर आया हूं अब दोबारा कैसे मिलूं। मन में थोड़ा संकोच था। वह मेरे दोस्त थे उन्होंने कहा कि तुम्हे चलना पड़ेगा और जब उन लोगों के साथ होटल पहुंचा तो मैंने अटल जी को संदेश भिजवाया कि युवा मोर्चा के कुछ कार्यकर्ता आपसे मिलना चाहते हैं और इतने लोग आये हैं। वे पन्द्रह मिनट बाद बाहर आये और कहा कि भाई तुम तो मिलकर गये थे। मैंने कहा कि यह युवा मोर्चा के लोग मुझसे जिद करने लगे कि हमें भी मिलाओ। वह इतने महान व्यक्ति थे कि उन्होंने कहा कि इन युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं के साथ मुझे चाय पीनी है। उन्होंने लॉन में कुर्सियां लगवाई और हम वहां पर बैठे। और मुझे अब भी याद है कि उनको टशी

दावा जी, स्वर्गीय अतुल गोपाल जी और मेरे पिती, ठाकुर कुंज लाल जी ने यह बात कही कि अटल जी आपके घुटनों का क्या हाल हैं? लेकिन अटल बहुत हाजिर जवाब थे, वह मजाक भी करते थे । उन्होंने कहा कि मुझे लगता था कि मै कभी देश का प्रधानमन्त्री बनुंगा और देश का प्रधान मन्त्री बनने के बाद दुनिया के सबसे अच्छे डॉक्टर से मैं अपना ऑप्रेशन करवाऊंगा तो मैं बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा। देखो ईश्वर ने मेरी सुन ली और मैं देश का प्रधान मन्त्री बन गया। दुनिया के अच्छे से अच्छे डॉक्टर ने मेरा इलाज भी कर दिया। लेकिन तब भी मेरे घुटने ठीक नहीं हुए। इसका मतलब तो यही है कि ऊपर वाला नहीं चाहता की मेरे घुटने ठीक हों। उन्होंने जीवन को कितनी गहराई से देखा 1995 की एक घटना मुझे याद आती है। जब भारी वर्षा हुई। अटल जी दिल्ली से हवाई मार्ग के द्वारा भुन्तर आये और फिर उन्होंने मनाली जाना था। लेकिन भुन्तर से लेकर मनाली तक का रोड जगह-जगह टूटा हुआ था। लेकिन जहां रोड टूटी हुई थी वह वहां से पैदल चलते थे। फिर गाड़ी से जाते थे। लगभग चार-पांच बार वह इसी तरह चले और इस तरह वह मनाली पहुंचे।

श्री एन जी ....द्वारा जारी

23/9/2018/1235 /डी0सी0/एन0जी0/1

माननीय वन मन्त्री जारी

अब श्रध्देय अटल बिहारी वाजपेयी जी हमारे मध्य नहीं रहे। मैं भी उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल हुआ। वहां लाखों की संख्या में लोग थे इस कारण हम उनके पार्थीव शरीर के नजदीक नहीं जा पाए। उसके अगले दिन हमनें नमिता भटटाचार्य दीदी को फोन किया और कहा कि हमें मिलना है तो उन्होनें कहा कि साढ़े बारह बजे आ जाओ। जब हम उनसे मिलने गए और हमने ये कहा कि आप मनाली आते रहिये मनाली भी आपका ही शहर है। तो उन्होनें एक बात कही कि भाई, अटल जी हमेशा याद मनाली को याद करते थे और

कहते रहते थे मनाली, प्रीणी, मनाली, प्रीणी । हिमाचल प्रदेश का यह सौभाग्य रहा है कि स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी 6 साल तक देश के प्रधानमन्त्री रहे। और इन 6 सालों में वह हर वर्ष कम से कम एक सप्ताह के लिए मनाली आते थे और इस एक सप्ताह में प्रधानमन्त्री कार्यालय मनाली के परिणी से ही चलता था। अटल जी को आज हम याद कर रहें हैं। अटल बिहारी वाजपेयी जी ऐसे पहले नेता रहे हैं जिन्होंने 4 अलग अलग राज्यों से चुनाव लडा और चुनाव जीते। वह उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात और दिल्ली राज्यों से चुनाव जीत कर के आए। मैं अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅ । लेकिन माननीय मुख्यमन्त्री जी ने भी एक बात कही है और हम सभी का मन है कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी कि याद में मनाली में एक भव्य स्मारक, जो भारत और भारत के बाहर के लोगों का भी एक श्रद्धा का केन्द्र बने, बनाया जाये। उस दिशा में हमको काम करना है ।

स्वर्गीय श्री दिले राम जी श्वाब, पहली पीढी के नेता थे। उनका जन्म 1922 में हुआ। उन्होंने बंजार में प्राईमरी स्कूल तक शिक्षा ग्रहण की और उसके बाद 10वीं की पढाई के लिए वह लाहौर चले गए । श्री दिलेराम श्वाब जी को एक हरित मानव के नाते भी जाना जाता था। उन्होंने एक बात कही थी कि तीर्थन नदी में कोई भी पन विद्युत

23/9/2018/1235 /2/डी0सी0/एन0जी0

परियोजना नहीं चलेगी, कोई और काम नहीं होगा। उनके इसी संघर्ष के कारण आज तीर्थन नदी भी बच गई और उसी के कारण आज ग्रेट हिमालयन नैश्नल पार्क भी वहां बना हुआ है वह आखिरी समय तक इस कार्य में सक्रिय रहे। उन्हें लिखने का भी शौक था। उन्होनें अपने जीवन में दो पुस्तकें लिखी। अन्त में बंजार में ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे। अटल जी के साथ साथ मैं उन्हें भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅा

हमारे राज्य की राज्यपाल रही श्रीमती उर्मिला सिंह जी को भी मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅ। श्री कुलदीप नैयर, वरिष्ठ पत्रकार, मैं उन्हें भी अपनी और से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅ। हिमाचल प्रदेश में भारी वर्षा के कारण जो जान माल का नुकसान हुआ है और केरल में बाढ़ के कारण जो त्रासदी और नुकसान हुआ है उसके के लिए मैं अपनी ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के सन्दर्भ में कुछ शब्द और कहना चाहूंगा। हम अटल जी के बारे में कितना कुछ कह सकते हैं। मैं एक घटना बताना चाहूंगा। कहते हैं 1940 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कानपुर के डी0ए0वी0 कालेज में ग्रैजुएशन कर रहे थे और उन्हें मालूम हुआ की उनके माता-पिता उनके विवाह की तैयारी कर रहे हैं। यह सुनकर वह कालेज से गायब हो गए और अपने एक मित्र श्री गोरे लाल जी गांव चले गए। उनके पूछने पर उन्होंने कहा कि मेरे घरवाले मेरा विवाह करवाना चाहते है इसलिए मैं भाग कर आया हूं। इस पर श्री गोरे लाल जी ने कहा कि इतना क्यों भागते हो शादी से? तो उस समय, यानी 1940 में, उन्होंने कहा था की मेरा उदेश्य है कि मैं पूरा जीवन अपने देश और भारत माता के लिए दूंगा इसलिए मैं शादी नहीं करूंगा। ऐसा रहा है उनका जीवन। मैं उन्हें पुनः अपना श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यहीं अपनी बात समाप्त करता हूॅ।

अध्यक्ष : मैं बार बार आग्रह कर रहा हूॅ, मुझे सभी के नाम उदगृहीत करने पडेंगे। अब मैं माननीय राकेश सिंघा जी को आमन्त्रित करता हूॅ।

श्री आर0 जी0 द्वारा जारी

23/08/2018/1240/RG/HK/1

Sh. Rakesh Singha: Speaker Sir, this Assembly Session has begun with the sad and painful note. The resolution moved by the Hon'ble Chief Minister to condole the death of the Hon'ble Prime Minister, Sh. Atal Bihari Vajpayee Ji, I

also join to condole his passing away. I would not add much to it but would say that from a very humble family he aroused to the highest political position of the Country. He was such a personality who faced all serious issues with very smiling face and even resolved very complex matter in a very simplified manner. The nation has lost a tall figure. I definitely feel that Bharatiya Janata Party has lost one of his tallest leader. Today, in this sad moment, I am with the party and with the people of the country.

I also join to condole the death of Sh. Dila Ram Shawab Ji. He was a Gandhian and also a Prajamandalist. He belongs to the era of Dr. Parmar and has had deep contribution in building what is today's Himachal Pradesh is.

It is also sad to learn that our former Governor, Smt. Urmila Singh Ji is no more. I join to condole her death and also give my condolences to her family members.

Shri Kuldeep Nayyar is also no more. I join to condole his death too. He had a very deep impact on the Indian literature and journalism.

It is painful to learn that the recent monsoon rains has got lot of pain to the people of Kerala. I have no words to say that what can be done in these deep hours of crises like others have said here. I know that it will only be a drop in the ocean. But I would like to give my next month salary for the people of Kerala.

I would also like to say that due to heavy rain, people from different parts of Himachal Pradesh are in great pain. I believe that our Government will definitely come forward to reduce their pain. While saying this, I once again condole all these great people who are no more. I would also thank the Hon'ble Chief Minister for contributing to the flood effected people of Kerala. With these words, thank you very much.

23/08/2018/1240/RG/HK/2

अध्यक्ष : अब श्री नरेन्द्र बरागटा जी शोकोद्गार में भाग लेंगे। कृपया चन्द शब्दों में अपनी बात समाप्त करें।

श्री नरेन्द्र बरागटा : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा जो यहां शोक प्रस्ताव लाया गया है, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे इस पर अपने उद्गार प्रस्तुत करने का मौका दिया। उनका कद इतना बड़ा था कि उसको शब्दों में मापना आसान नहीं है। उनका एक व्यापक प्रभाव था। देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी उनका अपना एक अलग ही प्रभाव था और आज संसार उनको याद कर रहा है। पिछले 5-6 दिनों से किसी ने उनको 'युग पुरूष' कहा, किसी ने 'महामानव', किसी ने 'शिखर पुरूष', किसी ने उनको 'विकास पुरूष', किसी ने 'अजातशत्रु', किसी ने कवि कहा और किसी ने उनको 'सतपुरुष' कहा। लेकिन यह राष्ट्र का लाड़ला अपना जो प्रभाव छोड़ गया है, वह across the party line है और वह उनके वीज़न को दर्शाता है। उनका वीज़न कितना महान था

एम.एस.द्वारा जारी

23/08/2018/1245/MS/HK/1

श्री नरेन्द्र बरागटा जारी---------

और उसको कार्यान्वित करने के लिए सकारात्मक भूमिका अपने पूरे जीवन में निभाते रहे। वे हमेशा प्रयासरत्त रहते थे कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतवर्ष को किस प्रकार से प्रोजैक्ट किया जाए। जैसा भाषण उन्होंने यू0एन0ओ0 में दिया था तो शिकागो में विवेकानन्द जी के भाषण को भी यदि याद किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि शिकागो में जिस तरह से विवेकानन्द जी बोले थे और भारतवर्ष का पक्ष जिस तरह से अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यू0एन0ओ0 असेम्बली में रखा, यह अपने आप में एक इतिहास ही नहीं है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्ग-दर्शक का काम करता रहेगा। देश की

राजनीति में उन्होंने एक नई तरह की राजनीति शुरू की और उसका इम्पैक्ट आने वाली पीढ़ी पर होगा बल्कि उसको आने वाली पीढ़ी सीख भी रही है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण हमने उनकी शव यात्रा में देखा जब समस्त युवा पीढ़ी जिन्होंने शायद उनको कभी बोलते नहीं सुना होगा, वे भी लाखों की संख्या में उस शव यात्रा में सम्मिलित थे। यह उनकी बहुत बड़ी शख्सियत का एक बहुत बड़ा प्रमाण है। तीन बार प्रधानमंत्री होते हुए सबको साथ चलाने का जो उनके पास एक बहुत जबरदस्त टेलैंट था वह शायद ही अब किसी नेता के पास हो। संघ से निकला हुआ यह स्वयंसेवक प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठकर छोटी-छोटी बातों को भी याद रखता था। मैं अपने से संबंधित एक छोटी सी घटना सुनाना चाहता हूं। अटल बिहारी वाजपेयी जी जब भी प्रीणी आए या जब कभी भी वे प्रदेश में आए, तो शायद ही कभी कोई ऐसा समय रहा होगा, जब मैं उनको नहीं मिला। लेकिन एक घटना जो मेरे जीवन में घटी और जिसके कारण मैं राजनीति में आया, वह घटना वर्ष 1993 की है। वर्ष 1993 में चुनाव की घोषणा

23/08/2018/1245/MS/HK/2

हुई और मुझे यह आदेश हुआ कि आपको जुब्बल-कोटखाई से चुनाव लड़ना है। सामने ठाकुर रामलाल जी थे और हार निश्चित थी। उस वक्त पार्टी के महामंत्री श्री प्रमोद महाजन जी थे और उनके साथ मैं वाजपेयी जी से मिलने गया। मैं वहां अटल बिहारी वाजपेयी जी से एक बालक की तरह जिद करने लगा। मैंने कहा कि यदि आप मेरे चुनाव क्षेत्र में चुनाव अभियान में आएंगे, तभी मैं चुनाव लड़ूंगा। चुनाव शुरू हुए और मुझे सूचना मिली कि अटल बिहारी वाजपेयी जी स्वयं जुब्बल में आकर एक बहुत बड़ी रैली को सम्बोधित करेंगे। एक छोटे से कार्यकर्त्ता के लिए जो उन्होंने किया वह एक अनूठी घटना थी। जो

उन्होंने अपनी एक वाणी दी थी कि मैं आऊंगा, उसको उन्होंने पूरा ही नहीं किया बल्कि जो वहां पर उन्होंने शानदार तरीके से अपना भाषण दिया, उससे मैं इतना प्रभावित हुआ कि आगे चलते-चलते आज मैं तीसरी बार यहां विधान सभा पहुंचा हूं। इसमें उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

यहां पर पूर्ववक्ताओं ने कहा कि वे शांति दूत थे लेकिन जब देश की सुरक्षा की बात आई तो पोखरण जैसे विस्फोट करने में भी उन्होंने फिर संकोच नहीं किया। यह ठीक है कि वे बस में लाहौर शांति का पैगाम लेकर गए थे। वे पाकिस्तान को समझाने गए थे कि शांति ही एक आखिरी रास्ता है लेकिन जब उन पर उलटा वार हुआ और देश पर कुठाराघात हुआ तो उन्होंने कारगिल युद्ध करके भी यह दिखा दिया कि यदि जरूरत पड़ी तो अटल बिहारी वाजपेयी ऐसे निर्णय भी ले सकता है जिसको कोई भी चेलैंज नहीं कर सकता और यह इतिहास है कि कारगिल में क्या हुआ।

अध्यक्ष जी, क्योंकि समय कम है इसलिए जो-जो बातें पूर्ववक्ताओं ने कही हैं, मैं उनको रिपीट नहीं करना चाहूंगा लेकिन एक-दो चीजें जो उन्होंने प्रदेश के लिए की हैं, उसमें एक आर्थिक सहायता भी है जो उन्होंने हमारे प्रदेश

23/08/2018/1245/MS/HK/3

के लिए दी। कल जब शोकसभा में माननीय वीरभद्र सिंह जी बोल रहे थे तो उन्होंने भी इस बात का उल्लेख किया, पूर्व मुख्य मंत्री जी ने भी इसका उल्लेख और आज हमारे मुख्य मंत्री जी ने भी उस बात का उल्लेख किया है। यह जो रोहतांग सुरंग हैं यह भी उनकी ही देन है।

जारी श्री जे0के0 द्वारा-----

23.08.2018/1250/जेके/वाईके/1

श्री नरेन्द्र बरागटाः.....जारी------

सेब पर भी उन्होंने कस्टम डियूटी बढ़ाई । मुझे याद है जब प्रीणी में तत्कालीन मुख्य मंत्री, प्रो0 प्रेम कुमार धूमल जी की अध्यक्षता में हम उनसे मिले, हमने उनसे सेब की बात की। उनकी सेब में बहुत ही रुचि थी। वे कई दफा मुझसे पूछते थे कि यह जो गोल्डन सेब है, यह तो सोने की तरह है लेकिन यह रॉयल क्या है और गोल्डन सेब कम क्यों बिकता है? गोल्डन खाने को अच्छा है लेकिन रॉयल ज्यादा क्यों बिकता है? उनको बागवानी में इतनी ज्यादा रूचि थी। यहां पर पिछले वक्ताओं ने भी कहा कि वे सेब के बागीचों में बैठ कर कविताएं लिखते थे। उससे उनको प्रेरणा मिलती थी। मैं यहां से उनका एक बार फिर धन्यवाद करना चाहता हूं कि जब हम दोबारा दिल्ली गए तो उन्होंने हमें अपने कार्यालय में दो मिनट नहीं बैठने दिया और हमारे निवेदन पर सेब पर कस्टम डियूटी बढ़ा करके 30 से 50 प्रतिशत कर दी। यह बहुत बड़ा कॉंट्रिब्यूशन प्रदेश की आर्थिकी में अटल बिहारी वाजपेयी जी का इस प्रदेश के लिए है।

आज जिस तरह से मुख्य मंत्री जी ने यहां पर कुछ बातें कही, मैं उनके लिए उनका धन्यवाद करना चाहता हूं । रिज पर उनकी एक बहुत बड़ी शानदार मूर्ति लगे, ऐसा उनका सुझाव है। इसी तरह से उनके नाम से कुछ परियोजनाओं का नाम रखा जाए, ऐसा उनका सुझाव है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि पूर्व भाजपा सरकार ने जिला शिमला के प्रगति नगर में अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम से एक तकनीकी संस्थान का नाम रखा। मुझे सिर्फ इतना कहना है जिस कविता का बार-बार वर्णन हुआ है वह कविता उनकी इतनी ज्यादा पॉपुलर हुई है और उसी पर मैं थोड़ा आगे बढ़ना चाहता हूं।

23.08.2018/1250/जेके/वाईके/2

अटल जी आप आज रहे तो नहीं, अंधेरा भी छंट गया, सूरज भी निकल गया, कमल भी खिल गया । जैसा कि सारे वक्ताओं ने कहा कि हमारे प्रधान मंत्री, 21 मुख्य मंत्री और हजारों की संख्या में विधायक उनकी शव यात्रा में निकले और यह इसका प्रमाण है कि उनकी मेहनत से आज यह भारतीय जनता पार्टी कहां से कहां पहुंच गई।

कमल भी खिल गया, दुख है, भारत का रत्न फिर चिरनिद्रा में सो गया। मैं, उनको भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं, इस अपूर्णीय क्षति में, जो कभी पूरी नहीं हो सकती, जो उन्होंने देश और हमारे प्रदेश के लिए किया है, भगवान उनको अपने चरणों में स्थान दें, ऐसी मैं कामना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, यहां पर माननीय मुख्य मंत्री जी ने और भी शोक प्रस्ताव रखे हैं, जिनमें दिले राम जी जो कि बहुत अच्छे बागवान थे, उन्होंने इस प्रदेश की सेवा की है। श्रीमति उर्मिला सिंह जी हिमाचल प्रदेश की राज्यपाल रही हैं और कुलदीप नैय्यर जी का 'Between the Lines' कॉलम बहुत ही पॉपुलर था। जब कोई भी वह अखबार पढ़ता था तो सबसे पहले उस कॉलम की तरफ जरूर ध्यान देता था । वे एक बहुत ही अच्छे पत्रकार थे।

केरल व हिमाचल प्रदेश में जो अभी बारिश से नुकसान हुआ है, मैं भी इस दुख में अपने आपको शामिल करता हूं। जिनके घरों का नुकसान हुआ है, जिनकी जाने गई हैं, मैं भी अपनी तरफ से उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। अंत में, जहां मैं अध्यक्ष महोदय, आपका

धन्यवाद करना चाहता हूं,उस महान शख्सियत के लिए दोबारा से मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

23.08.2018/1250/जेके/वाईके/3

अध्यक्षः श्री सुन्दर सिंह ठाकुर ।

श्री सुन्दर सिंह ठाकुरः अध्यक्ष महोदय, यहां पर भारत रत्न, पूर्व प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन पर जो शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में आया है, मैं भी अपने आपको उसमें शामिल करता हूं। मुझ से पूर्व सभी वक्ताओं ने उनके बारे में बहुत विस्तृत बातें की हैं। शुरू के दौर में जब वे कुल्लू-मनाली आते थे उस वक्त वे मात्र सांसद थे। भुन्तर का वह पुराना ऐयरपोर्ट, पुराना टर्मिनल उसमें

एस0एस0 द्वारा जारी----

23.08.2018/1255/SS-YK/1

श्री सुन्दर सिंह ठाकुर क्रमागतः

एक वी0आई0पी0 कक्ष होता था, वहां पर वे आते थे और उन दिनों ऐसा कोई साधन नहीं था कि मनाली से एकदम कोई गाड़ी आए, इसलिए वे बड़ी देर तक कक्ष में इंतजार करते थे। बाहर टहलने भी आते थे। एक वक्त ऐसा था कि पंडित सुख राम जी जब केन्द्र में दूरसंचार मंत्री थे तो प्रोटोकोल के तहत उनको रिसीव करने के लिए सरकारी महकमा आता था। कार्यकर्त्ताओं की भीड़ भी रहती थी। उस समय जब वाजपेयी जी भी साथ आते थे तो वे कहीं साइड में बैठे रहते थे। लेकिन मैंने देखा कि पंडित सुखराम जी ने कई बार उन्हें अपनी गाड़ी भेजकर वहां से मनाली पहुंचाया। कई बार वे लिफ्ट लेकर भी वहां से जाते थे। वे बड़ी सादगी से रहते थे। कभी उन्होंने यह अहसास नहीं करवाया कि उन्हें सरकारी

सुविधा नहीं मिली। वे बोलकर यह सुविधा ले सकते थे लेकिन उन्होंने उसे कभी नहीं लिया। ऐसा उनका सादगी वाला जीवन था। खासतौर से उनका गांव के लोगों के साथ मेल-जोल था। मैं तो कहता हूं कि वे हिमाचल के लिए एक ब्रांड एम्बेसडर थे। नेहरू जी के बाद अगर किसी ने हिमाचल को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर रखा तो वे अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। उनके निधन के बाद जब हम लोगों की फेसबुक पर पोस्ट देख रहे थे तो कोई रेस्टोरेंट वाला कहता है कि वे मेरे यहां पर पीज़ा खाते थे। कोई ढाबे वाला कहता है कि मेरे यहां के उन्हें ये पकवान पसन्द थे। इसी तरह क्योंकि वे खाने के शौकीन थे उन्होंने लोकल व्यंजनों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान करवाई। वे कुल्लू-मनाली के प्रीणी क्षेत्र से संबंध रखते थे, हमें ऐसा लग रहा है कि जैसे हमने कोई अपना खोया है। ऐसे वक्त में हम उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं प्रकट करते हैं।

इसके बाद हमारे पूर्व विधायक, श्री दिले राम शवाब, जिन्हें शेरे बंजार कहा जाता था, मैं उन्हें 'Saviour of Tirthan Valley' कहना चाहूंगा। तीर्थन वैली को जितना उन्होंने संरक्षण दिया है, मेरा सौभाग्य है कि मैं विधायक बनने के बाद मई महीने में उन्हें मिलने गया। हालांकि उस दिन बंजार मेला था, मैं बंजार मेले में न जाकर पहले बुजुर्ग का आशीर्वाद लेने गया। जब मैं उनके पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे पहचाना। यह उनकी मृत्यु से एक महीने पहले की बात है। इतनी उनकी स्मरण शक्ति थी। उन्होंने मेरे परिवार और बुजुर्गों का हाल-चाल बुलन्द आवाज में पूछा और हमें नहीं लगता था कि वे हमें छोड़कर जायेंगे। उन्हें अभी उम्मीद थी कि

23.08.2018/1255/SS-YK/2

उन्हें बहुत लम्बा जीवन जीना है। जब वे मुझसे बात कर रहे थे तो कहने लगे कि मैं आजकल बीमार चल रहा हूं लेकिन मैं जल्दी ठीक हो जाऊंगा। मुझे दो-तीन दिन के अंदर तेरे पास कुल्लू आना है तब मैं बाकी बातें करूंगा। वे राजनीति के बारे में अक्सर हमें बताते थे। जब मैं पंचायत समिति का अध्यक्ष बना, उसके बाद जिला परिषद् का उपाध्यक्ष बना तो उन्होंने मुझे चिट्ठियां लिखीं और ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं जो मुझे हमेशा याद रहेंगी। उन्होंने सबसे बड़ी बात यह की कि हमारे पूर्व मुख्य मंत्री, राजा वीरभद्र सिंह जी को कुछ प्रेजेंटेशन्ज़ दीं कि क्यों तीर्थन घाटी में पन-विद्युत योजनाएं नहीं लगनी चाहिएं और आप

सभी को मालूम होगा कि एक दर्जन से ऊपर स्वीकृत पन-विद्युत योजनाएं को राजा साहब ने उनकी प्रेजेंटेशन पर रोका।

जारी श्रीमती के0एस0

28.08.2018/1300/केएस/एजी/1

श्री सुन्दर सिंह ठाकुर जारी----

इन पर कितना प्रैशर रहा होगा कि उन्हें चालू किया जाए? आप जानते हैं कि जो पनविद्युत योजनाएं स्वीकृत होती हैं, उसमें बड़ी-बड़ी कम्पनीज़ होती है। कई तरह से प्रैशर रहा होगा लेकिन राजा साहब ने उस पर एक्शन लिया । मैं हाल ही में तीर्थन वैली गया था। वहां आज भी ऐसा लगता है कि वही पुराना इलाका है और वहां पर टूरिज़्म पनप रहा है। हिमाचल में अगर कहीं भी होम स्टे योजना सबसे बेहतर तरीके से चल रही है तो वह तीर्थन घाटी में चल रही है क्योंकि वहां पर पर्यावरण के साथ कोई खिलवाड़ नहीं हुआ है और ट्राउट फिशिंग के लिए जितना बढ़िया इलाका वह है, यहां लिखा गया है कि उन्हें ट्राउट फिशिंग का शौक था, मैं यह कहना चाहूंगा कि वे तो लोगों को फिशिंग करने से रोकते थे। ट्राउट का संरक्षण करते थे और हाई एंड टूरिज्म अगर कहीं नज़र आया तो वह तीर्थन वैली में नज़र आया। उनके साथ मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध रहे हैं क्योंकि कुल्लू का बदाह क्षेत्र बन्जार के साथ है। । उन्होंने लिफ्ट इरिगेशन की कितनी योजनाएं वहां उस वक्त शुरू की जो आज भी चल रही हैं। मैं ऐसे वक्त में उनके परिवारजनों के दुख के साथ शामिल हूं और उनके पूरे परिवार के प्रति हम संवेदनाएं जताते हैं।

इसी तरह से श्रीमती उर्मिला सिंह जी, कुलदीप नैय्यर जी और हाल ही में भारी बरसात की वजह से हिमाचल और केरल में जो जानें गई हैं, उसमें भी मैं अपने आप को शामिल करता हूं।

इसके साथ ही सबसे बड़ी दुखद घटना यह भी है कि कुल्लू में 63 गायें गौशाला से बही है । उसके लिए भी मैं चाहूंगा कि हम संवेदनाएं जताएं । अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

28.08.2018/1300/केएस/एजी/2

अध्यक्षः श्री रमेश चंद ध्वाला जी ।

श्री रमेश चंद ध्वालाः आदरणीय अध्यक्ष जी, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव रखा, मैं भी अपने आप को उसमें शामिल करता हूं। यह विधि का विधान है जो समाज में आया है, उसने जाना ही है लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो समाज में एक छाप छोड़कर जाते हैं और समाज उनको सदा-सदा के लिए याद करता है। 16 अगस्त, 2018 को माननीय पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के स्वर्गवास होने की टैलीविज़न और रेडियों के माध्यम से जब हमने खबर सुनी तो पूरे हिमाचल प्रदेश और पूरी दुनिया में सन्नाटा छा गया । एक ऐसा व्यक्ति जिसका हिन्दुस्तान के मानचित्र पर नाम था। उन्होंने जो कुछ किया, विशेषकर हिमाचल के लोग वह कभी नहीं भुला सकते। मुझे याद है कि 1980 में ज्वालामुखी में एक कार्यक्रम हुआ और उसमें श्री वाजपेयी जी आए थे। वहां पर बी0जे0पी0 का नामकरण किया गया। वहां पर हमने उनका भाषण सुना उन्होंने जो हमें प्रेरणा दी,

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

23.8.2018/1305/av/ag/1

श्री रमेश चंद ध्वाला जारी------

वहां पर लोग उनसे बहुत प्रभावित हुए थे। मुझे भी एक-दो बार उनसे मिलने का मौका मिला, उनका बहुत सरल स्वभाव था जिसके बारे में मेरे से पूर्व वक्ताओं ने यहां पर अपने

विचार रखे हैं। उनका स्वभाव इतना सरल था कि उनके पास से कोई भी व्यक्ति निराश होकर वापिस नहीं आता था। यह भरपाई नहीं की जा सकती लेकिन उन्होंने देश के लिए जो कुछ भी किया है वह देश के लोग ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया याद कर रही है। हिमाचल प्रदेश में टेलीफोन की क्रान्ति जो आई है यह उनकी देन है। उन्होंने अपने कार्यकाल में चम्बा से 'अन्त्योदय कार्यक्रम' लांच किया उसकी वजह से आज हमारे प्रदेश के गरीब लोगों को दो समय का भोजन मिल रहा है। यहां पर उनकी तरफ से इंडस्ट्री पेकैज मिला और आज बद्दी-बरोटीवाला एक इंडस्ट्री हब बना हुआ है। जब यह पेकैज मिला तो उसी समय सोलन में हमारे लोग उनका धन्यवाद कर रहे थे। उन्होंने प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना चलाई जो कि एक बहुत ही अच्छी योजना है। हमारा प्रदेश एक पहाड़ी प्रदेश है इसलिए उस नीति के अंतर्गत हमारे प्रदेश को ढाई सौ की जनसंख्या के तहत सड़क सुविधा प्रदान करने हेतु योजना तैयार की गई जिसके लिए हमारे प्रदेश के लोग उन्हें सदैव याद रखेंगे। करगिल युद्ध में मिली विजय से हमारा सिर गर्व से ऊंचा होता है, हमें वहां पर जो शानदार विजय मिली उसके लिए वे खुद वहां गये और नौजवानों को आशीर्वाद, स्नेह और प्यार दिया। मैं आज यह कहने जा रहा हूं कि हिमाचल प्रदेश एक छोटा सा राज्य है और अटल जी इस प्रदेश को अपना घर मानते थे। माननीय मुख्य मंत्री जी ने यह कहा है कि रोहतांग टनल का नामकरण अटल बिहारी वाजपेयी के नाम से किया जायेगा ताकि प्रदेश की जनता उन्हें सदा के लिए याद रखें। यहां पर मेरे से पूर्व वक्ताओं ने बड़े विस्तार से अपने विचार रखे हैं। मैं ईश्वर से यह कामना करता हूं कि उनके परिवार के सदस्यों व रिश्तेदारों को परमात्मा इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे और उनकी आत्मा को शांति मिले। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि उनका अगला जन्म भी हिन्दुस्तान में हो।

श्री टी0सी0द्वारा जारी

23.08.2018/1310/TCV/DC/1

श्री रमेश चंद ध्वाला.... जारी

ऐसे महापुरूष जब समाज में आते हैं तो समाज की दशा और दिशा को बदल देते हैं। इसलिए मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हिन्दुस्तान में ही जन्म लें। मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और माननीय विधायक श्री दिले राम शवाब जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। उनके परिवार को परमात्मा शक्ति दें, वे इस सदमें को बर्दाश्त कर सकें और उनकी आत्मा को शान्ति मिलें।

महामहिम राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह जी का भी स्वर्गवास हुआ है। मैं उनको भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

इसके अलावा और भी कई विभूतियां स्वर्ग सिधार गई हैं। मैं उनको भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। हिमाचल प्रदेश में बारिश से जो जानी नुकसान हुआ है, पशुओं का नुकसान हुआ है और जो लोग इस समाज को छोड़कर चले गये हैं, उनके प्रति हम संवेदना प्रकट करते हैं। पिछले दिनों बहुत से पशु बाढ़ से बह गये और कुछ मलवे में दब गये। इसलिए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में इस प्रकार की बारिश न हो। इस बारिश से हिमाचल प्रदेश में लाखों-करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ है। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे शोकोद्गार में बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

23.08.2018/1310/TCV/DC/2

अध्यक्षः शोकोद्गार प्रस्तुत करने के लिए अनेकों नाम मेरे पास आये हैं। जिनमें डॉ0 राजीव सैजल जी, श्री नरेन्द्र ठाकुर जी, कर्नल इन्द्र सिंह जी, श्री बलबीर सिंह जी (चिन्तपूर्णी) श्री किशोरी लाल जी, श्री हीरा लाल जी, श्री राजिन्द्र गर्ग जी, श्री जीत राम कटवाल जी, श्री विक्रमादित्य जी, श्री बलबीर सिंह वर्मा और श्री सुरेन्द्र शौरी जी के नाम हैं। लेकिन समय के अभाव के कारण इन सभी के शोकोद्गार को माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत शोकोद्गार में शामिल किया जाता है।

स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, पूर्व प्रधान मंत्री और श्री दिले राम शवाब जी, माननीय पूर्व सदस्य, हिमाचल प्रदेश विधान सभा, श्रीमती उर्मिला सिंह जी, हमारे प्रदेश की महामहिम राज्यपाल रही व विभिन्न प्राकृतिक त्रासदियों के अंदर अनेक जाने गई हैं, उनके संबंध में माननीय मुख्य मंत्री जी ने शोकोद्गार प्रस्तुत किए हैं। मैं भी अपने आपको इन शोकोद्गार में शामिल करता हूं।

श्रीमती एन0एस0 द्वारा ... जारी

23-08-2018/1315/NS/DC/1

अध्यक्ष महोदय ------जारी

श्रद्धेय स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी देह रूप में आज हमारे मध्य नहीं हैं परन्तु करोड़ों भारतवासियों के दिलों में अटल जी उसी प्रकार विद्यमान हैं। एक ऐसी शख्सियत जिसने सम्पादक के रूप में अपना जीवन शुरू किया। उनकी लेखनी व उनकी वाणी में जो जादू था वह लोगों के सर चढ़कर बोलने लगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा से ओतप्रोत वह शख्स राष्ट्र की परिभाषा गढ़ता चला गया। यह राष्ट्र मेरा मन्दिर है, यह देश मेरा मन्दिर है; मुझे आजीवन केवल और केवल इस मन्दिर की पूजा करनी है, यह लक्ष्य लेकर जीवन जिया और यही लक्ष्य लेकर मृत्यु का आलिंगन किया।

अटल जी, छोटी सी आयु में सांसद बने। भाषणशैली और उनकी विद्धवता के कायल हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू जी एक दिन बरबस बोल बैठे कि आपको देश का नेतृत्व करना है। सन 1957 में पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन आप देश के प्रधान मंत्री होंगे।

माननीय अटल जी हास्य और व्यंग्य के बहुत बड़े जानकार थे। मुझे एक घटना स्मरण है। सोलन में एक जनसभा का आयोजन था, मैदान छोटा था और आयोजकों ने सोचा कि मंच का स्थान भी जनसभा के लोगों के लिए रख दिया जाये। वहां पर एक बहुत बड़ा डंगा था और उस डंगे के पीछे बैठने की जगह थी और उसको मंच बना दिया। अटल जी आये और

मंच पर गये। जब भाषण देने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने अपनी शैली में कहा कि मैं हिमाचल प्रदेश के सोलन में आया था । अब मुझे लगता था कि मैं किसी मंच पर आऊंगा और मंच से संबोधित करूंगा व भाषण दूंगा लेकिन आप लोगों ने मुझे मचान पर चढ़ा दिया। उनमें इस प्रकार का व्यंग्य और सारे समाज को एकदम साथ लेने की कला थी।

देश भक्ति की मिसाल अटल जी, जब 1971 में भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो पूरा देश पाकिस्तान के खिलाफ़ खड़ा हो, इसके लिए अटल जी ने स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी को रणचण्डी की संज्ञा दी और कहा कि दुश्मनों का सर्वनाश कर दो। अटल जी कहते थे कि भारत में रहते हुए हमारी वैचारिक भिन्नता हो सकती है परन्तु देश के दुश्मनों के सामने हम सब भारतवासी एक हैं। परन्तु केवल चार वर्ष उपरांत 1975 में जब देश में आपातकाल लगा, लोकतंत्र खतरे में पड़ा तो जेल की सलाखें भी

23-08-2018/1315/NS/DC/2

उनके तेज़ को न रोक पाई और पहली गैर-कांग्रेसी सरकार देश में बनी, जिसमें विदेश मंत्री के नाते अटल जी ने विश्व में भारत का लोहा मनवाया। अटल जी जिस विचार के थेः-

"अश्वं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।

अजापुत्रं बलिं दद्यात देवो दुर्बलघातकः ॥"

अर्थात न अश्व, न हाथी और न शेर की, किसी की बलि नहीं दी जाती है, बलि केवल बकरी के बच्चे की दी जाती है। इसलिए मेरे राष्ट्र को शक्ति सम्पन्न बनना होगा। इसी दिशा में 13 मई, 1998 को पोखरन-2 का विस्फोट दुनिया को सकते में डालने वाला था। इसके कारण भारत पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध भी लगे। उनकी परवाह किये बिना अटल जी ने हमारे देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाया। विश्व के पटल पर भारत की छवि कैसी हो, पाकिस्तान व अन्य पड़ोसी देशों के साथ हमारे संबंधों की विवेचना, उसमें अटल जी का कोई सानी नहीं था।

विकास के लिए दिये जाने वाले धन का राज्यों द्वारा उसका सही उपयोग हो, इस दृष्टि से "प्रधान मंत्री सड़क योजना", "सर्व शिक्षा अभियान" जैसी महत्वकांक्षी योजनाओं का

श्रीगणेश किया। महानगरों को आपस में जोड़ने के लिए "स्वर्णिम चतुर्भुज योजना" चलाई। मेरे देश में बहती हुई नदियों का पानी देश के किसान के काम आये, इसके लिए नदियों को जोड़ने की योजना जैसे उनके महत्वपूर्ण कार्य सदैव स्मरण किये जायेंगे।

देश की सीमाओं की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले प्रहरी शहीद हैं, उनकी शहादत को देशवासी नम्न करें, यह ज़ज्बा पहली बार कारगिल युद्ध के दौरान अटल जी ने पैदा किया। वीरांगनाओं का सम्मान, शहीद सैनिकों को उनके पैत्रिक स्थान पर राजकीय सम्मान के साथ अन्तेष्टि और उनके परिवार को अनेक प्रकार की सुविधाओं की शुरूआत करना, उनके ज़ज्बे को दर्शाता है और आज पूरा देश उस ज़ज्बे को सलाम करता है। लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी, जिसने आपातकाल का डटकर विरोध किया, लोकतंत्र की पुर्नस्थापना में सर्वस्व लगाया।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

23.08.2018/1320/RKS/HK-1

अध्यक्ष... जारी

हिमाचल प्रदेश के प्रति उनका विशिष्ट लगाव व अपनापन रखने वाले ऐसे महान पुरुष अटल जी को बार-बार नम्न। हिमाचल के संबंध में अनेक माननीय सदस्यों ने अपनी बात रखी है। मुझे एक घटना उदगृहीत करती है। मुझे स्मरण आता है 1 दिसम्बर, 2002 का वह दिन जब सोलन में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया था। इस रैली का संचालन मैं स्वयं कर रहा था। इसमें श्रद्धेय स्वर्गीय श्री अटल जी ने हिमाचल प्रदेश को औद्योगिक पैकेज दिया। जिसके कारण लगभग 2 लाख हिमाचलियों के लिए रोजगार के नये अवसर सृजित हुए और हिमाचल प्रदेश औद्योगिक राज्य के रूप में आगे बढ़ा। इस प्रकार हिमाचल के प्रति उनका स्नेह, प्यार व आशीर्वाद सदा स्मरण रहेगा।

उनका मंत्र था- देश पहले, पार्टी उसके बाद और मैं सबके बाद। उनका ध्येय था भारत राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाना उनका सदैव यह वाक्य रहा कि जो आजादी हमें मिली है

उसके लिए हज़ारों, लाखों लोगों ने बलिदान दिया। हमें उन बलिदानियों का कर्ज़ चुकाना है। उनकी एक कविता जिसका केवल एक अंतरा जो बलिदानियों के लिए समर्पित हैः-

जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फांसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।
याद करें काला पानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुट तेल पेरते,
सावरकर से बलिदान को।
याद करें बहरे शासन को,
बम से थर्राते आसन को,
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
के आत्मोत्सर्ग पावन को।
अन्यायी से लड़े,
दया की मत फरियाद करें। उनकी याद करें।

23.08.2018/1320/RKS/HK-2

अर्थात् बलिदानी जिन्होंने देश को आजादी दिलाई उनके प्रति उनका समर्पण और इस प्रकार के भाव थे। भारतीय संस्कृति, भारतीय शास्त्रों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा थी। उन्होंने कहा था कि राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है परंतु हमारी हज़ारों साल पुरानी संस्कृति इस राष्ट्र की आत्मा है। उनकी कविता की चंद पंक्तियां जो उन्होंने कही और कैसे उन्होंने इसे सुंदर शब्दों में पिरोया हैः-

वेद-वेद के मंत्र-मंत्र में,
मंत्र-मंत्र की पंक्ति-पंक्ति में,
पंक्ति-पंक्ति के शब्द-शब्द में,

शब्द-शब्द के अक्षर स्वर में,
दिव्य ज्ञान-आलोक प्रदीपित,
सत्यं,शिवं, सुंदरं शोभित,
कपिल,कणाद और जैमिनि की
स्वानुभूति का अमर प्रकाशन,
विशद-विवेचन, प्रत्यालोचन,
ब्रह्मा, जगत, माया का दर्शन।
कोटि-कोटि कंठों में गूंजा
जो अति मंगलमय स्वर्गिक स्वर,
अमर राग है, अमर राग है।

ऐसे महान पुरुष अटल जी को मैं अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं और चंद मिनटों की एक डॉक्यूमैंटरी आपके सामने प्रस्तुत करता हूं।

(अटल जी के जीवन पर डॉक्यूमैंटरी दिखाई गई।)

श्री बी.एस. द्वारा .... जारी

23.8.2018/1330/DT/YK/-1

अध्यक्ष महोदय ... जारी....

अब मैं सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हो जाएं।

(सभा मंडप में उपस्थित सभी अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हुए।)

(आज की कार्यसूची में सम्मिलित किए गए प्रश्नों के उत्तर उन मंत्रियों द्वारा जिन्हें ऐसे प्रश्न संबोधित किए गए हैं, सभा पटल पर रखे समझे गए और कार्यवाही का हिस्सा बने।)

अब इस माननीय सदन की बैठक दिवंगत आत्माओं के सम्मान में शुक्रवार, 24 अगस्त, 2018 के 11.00 बजे पूर्वाह्न तक स्थगित की जाती है।

शिमला-171004 **यशपाल शर्मा,**
दिनांकः 23 अगस्त, 2018 **सचिव।**